सेवा समर्पण

मूल्य ₹ 20

वर्ष-42, अंक-02, कुल पृष्ठ-36, कार्तिक-अग्रहन, विक्रम सम्वत् 2081, नवम्बर, 2024

सेवाधाम के वार्षिकोत्सव की कुछ झलकियां

देश सेवा में लगा है सेवाधाम

बच्चों और अभिभावकों की बैठक

गत दिनों पश्चिम-विभाग नांगलोई सेवा भारती केंद्र में बालवाड़ी बच्चों के अभिभावकों के साथ बैठक रखी गई। इस बैठक में महिला समिति की बहनों का आगमन हुआ। पश्चिम विभाग से सुमन ग्रोवर जी (ठौली जी) और उनकी कार्यकारिणी उपस्थित थी। उन्होंने बालवाड़ी के सभी बच्चों को अपने करकमलों द्वारा बैग, वस्त्र किताबें इत्यादि सामान दिया। उन्होंने बच्चों के अभिभावक से बच्चों के सुख, सुविधा व परेशानियों के विषय को लेकर चर्चा की व अभिभावकों ने भी बातचीत की। इस अवसर पर बच्चे काफी उत्साहित थे।

सिलाई की बहनों का प्रशिक्षण

सिलाई की बहनों (पूर्वी, आर के पुरम, पश्चिमी आदि) का प्रान्त प्रशिक्षण वर्ग 8 अक्टूबर को प्रान्त कार्यालय पर प्रातः 9:30 से 4:30 बजे तक चार सत्रों में रहा। पहला सत्र श्रीमती सगीता जी का रहा। उन्होंने सिलाई सेवा केन्द्रों के कारण होने वाले व्यक्ति परिवर्तन व समाज परिवर्तन पर चर्चा रखी। उन्होंने सेवा केन्द्रों की संभाल, सेवा केन्द्रों की वर्तमान स्थिति, केन्द्रों पर संचालन समिति, बस्ती संपर्क की स्थिति आदि विषयों पर भी विचार रखा। चौपाल के कार्यकर्ताओं के माध्यम से 20, 000 रुपए तक के कर्ज की जानकारी भी बहनों को दी गई। दूसरा सत्र अंजू दीदी का रहा। उन्होंने सेवा भारती का परिचय, सेवा भारती के व्यापक व सर्वस्पर्शी सेवा कार्य, सेवा भारती के उद्देश्य व कार्यप्रणाली, पिछड़े समाज के बदलाव का आधार आदि पर विचार रखा।

तीसरा व चतुर्थ सत्र मीनाक्षी दीदी ने लिया। उन्होंने अपनी सिलाई की बहनों से निम्न बिन्दुओं पर जानकारी एकत्र की-शिक्षिका बहन की योग्यता, शिक्षण विधियों की जानकारी, पाठ्यक्रम व पाठ्य योजना की जानकारी, कक्षा प्रबंधन की जानकारी लेना, आकलन व मूल्यांकन की जानकारी, संचार कौसल व तकनीकी दक्षता की जानकारी, स्वयं के विकास हेतु किये गये कार्य की जानकारी। कुल उपस्थिति 43 रही।

संरक्षक
श्रीमती इन्दिरा मोहन

परामर्शदाता
डॉ. राम कुमार

सम्पादक
डॉ. शिवाली अग्रवाल

कार्यालय
सेवाकुंज, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15
E-mail: info@sewabhartidelhi.org
Website: www.sewabhartidelhi.org

पृष्ठ सज्जा
मणिशंकर कुमार

एक प्रति : 20/-रुपये
वार्षिक शुल्क : 200/-रुपये

सेवा समर्पण

वर्ष-42, अंक-02, कुल पृष्ठ-36, नवम्बर, 2024

विषय - सूची

शीर्षक	लेखक	पृ.
संपादकीय		4
देश सेवा में लगा है सेवाधाम	प्रतिनिधि	6
सेवाधाम विद्या मंदिर का वार्षिकोत्सव संम्पन्न		8
45,411 स्थानों पर 72, 354 शाखाएं	प्रतिनिधि	10
सामुदायिक रसोई की शुरुआत.....	पूज्य श्री सुधांशुजी महाराज	12
सामाजिक समरसता के सूत्रधार : गुरुनानक	स्वाति पाठक 'स्वाति'	14
भारतीय विवाह परंपरा	प्रो. दयाल सिंह पँवार	15
भारत की विशिष्ट कुटुंब परंपरा	मानवेंद्र	18
संस्कृति एवं सेवा का संगम है वडतालधाम	प्रतिनिधि	21
ऑटो लेकर निकल पड़ा मोहन		22
दीपक का सन्देश	गंगा प्रसाद 'सुमन'	25
सेवा भारती की गतिविधियाँ		25

पाठकों से अनुरोध

सेवा समर्पण के सुधी पाठकों से अनुरोध है कि वे हर अंक में प्रकाशित लेखों और महापुरुषों के विचारों पर अपनी राय अवश्य भेजें।

पता : संपादक, सेवा समर्पण,
13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15, E-mail: info@sewabhartidelhi.org

विदेशी पैसे से भारत विरोधी 'खेल'

समाज के सहयोग से अपनी सेवा भारती अनेक सेवा प्रकल्पों को चलाती है। शिक्षा, संस्कार, रोजगार देने वाले प्रकल्पों से समाज का एक बड़ा वर्ग आत्मनिर्भर बन रहा है। इसमें हर वर्ग और हर जाति के लोग शामिल हैं। सेवा भारती के कार्यकर्ता सेवा करते समय यह नहीं देखते हैं कि कौन किस मजहब का है और कौन किस जाति का है। समरस और समर्थ समाज बनाना ही इन सेवा भारती का लक्ष्य है।

वहीं दूसरी ओर कुछ ऐसे भी गैर-सरकारी संगठन (एनजीओ) हैं, जो विदेश से पैसे लेकर समाज को जाति और मजहब में बांटने में लगे हैं। यही नहीं, ये भारत विरोधी तत्वों को हवा दे रहे हैं। इसका खुलासा हाल ही में आयकर विभाग द्वारा की गई एक जांच से हुआ है। कई बड़े एनजीओ पर गंभीर आरोप लगे हैं। इनके विदेशी संस्थाओं और राष्ट्रविरोधी गतिविधियों से जुड़े होने के भी संकेत मिले हैं। कई प्रमुख एनजीओ ने विदेशी योगदान विनियमन अधिनियम (एफसीआरए) के नियमों का भी उल्लंघन किया है। जांच का सबसे चिंताजनक निष्कर्ष यह है कि इन संगठनों ने व्यापक जनहित में कार्य करने के बजाय राजनीतिक या मजहबी गतिविधियों को बढ़ावा दिया है। इनके जरिए भारत के भीतर सामाजिक और राजनीतिक विभाजन को और गहरा करने का प्रयास किया गया है।

कई एनजीओ पर यह आरोप है कि उन्होंने राजनीतिक उद्देश्यों को साधने के लिए मजहबी या जाति-आधारित कार्यों का समर्थन किया। कुछ संगठनों ने चुनावी मौसम या राजनीतिक तनाव के समय विशेष रूप से कथित रूप से अल्पसंख्यक समुदायों के हितों को बढ़ावा देने के लिए विदेशी धन का उपयोग किया। जैसे 'ऑक्सफैम इंडिया' पर उत्तर प्रदेश और गुजरात के कुछ हिस्सों में सांप्रदायिक तनाव वाले क्षेत्रों में मजहबी या जातीय गतिविधियों को बढ़ावा देने का आरोप है। जिनका उद्देश्य मजहबी पहचान के आधार पर मतदाताओं को लामबंद करना था, न कि व्यापक सामाजिक समरसता को बढ़ावा देना। इस प्रकार की सांप्रदायिक लामबंदी क्यों की जाती है, यह बताने की आवश्यकता नहीं है।

एक रिपोर्ट के अनुसार 2015-2021 के बीच 'केयर इंडिया' को 92% पैसा विदेशी स्रोतों से मिला। 'एन्वायरोनिक्स ट्रस्ट' को 95% धनराशि विदेश से मिली। 'लाइफ' को विदेश से 86% पैसा मिला। 'ऑक्सफैम इंडिया' को 78% विदेशी संस्थाओं द्वारा वित्त पोषित किया गया। ऐसे ही 'सीआईएसएसडी' को 100% वित्त पोषण विदेश से प्राप्त हुआ।

कुछ एनजीओ पर यह आरोप है कि उन्होंने विदेशी धन का उपयोग करके राजनीतिक परिणामों को प्रभावित करने का प्रयास किया, जबकि इसे सामाजिक न्याय या पर्यावरणीय सक्रियता के रूप में प्रस्तुत किया। 'एन्वायरोनिक्स ट्रस्ट' (ईटी) और 'लाइफ को-यूरोपियन क्लाइमेट फाउंडेशन' (ईसीएफ) जैसे विदेशी संगठनों के साथ मिलकर भारत में कोयला और ऊर्जा परियोजनाओं के खिलाफ विरोध और मुकदमेबाजी करने का आरोप है। जबकि इन गतिविधियों को पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों के रूप में प्रस्तुत किया गया था। कुछ अभियानों के पीछे असली उद्देश्य भारत के औद्योगिक और ऊर्जा क्षेत्रों को कमजोर करना था, जो कि देश की आर्थिक प्रगति के लिए महत्वपूर्ण हैं।

इसके अतिरिक्त, 'लाइफ', जिसने भारी मात्रा में विदेशी पैसा प्राप्त किया, पर विशेष रूप से उन परियोजनाओं को निशाना बनाने का आरोप है जिन्हें राजनीतिक रूप से विवादास्पद माना जाता है।

कुछ एनजीओ पर विदेशी धन का उपयोग कर जाति आधारित आंदोलनों को बढ़ावा देने का आरोप है, जिससे सामाजिक अशांति फैलती है। कुछ एनजीओ पर 'जाति न्याय' के नाम पर विरोध और आंदोलनों का आयोजन करने का आरोप है, लेकिन वास्तव में ये आंदोलनों का उपयोग विशिष्ट राजनीतिक आख्यानों को आगे बढ़ाने के लिए किया गया, जिसने समुदायों को और विभाजित किया।

झारखंड में विशिष्ट आदिवासी समूहों के अधिकारों की वकालत करते हुए 'सर्वाइवल इंटरनेशनल' जैसे कुछ अंतर्राष्ट्रीय एनजीओ पर यह आरोप लगाया गया है कि उन्होंने औद्योगिक परियोजनाओं का विरोध किया जो व्यापक समुदाय के लिए लाभदायक हो सकती थीं। कुछ एनजीओ पर यह भी आरोप है कि उन्होंने विदेशी धन का उपयोग करके भारत में चुनावों या राजनीतिक आंदोलनों को प्रभावित करने का प्रयास किया। उदाहरण के लिए, पश्चिम बंगाल और केरल के कुछ हिस्सों में, कुछ विदेशी वित्त पोषित एनजीओ को विशिष्ट राजनीतिक दलों या उम्मीदवारों का समर्थन करने का आरोप है, जो उन दलों के राजनीतिक वादों के साथ मेल खाते थे।

इस विदेशी वित्तपोषण का सबसे चिंताजनक पहलू यह है कि इसे समुदायों को एक-दूसरे के खिलाफ खड़ा करने के लिए इस्तेमाल किया गया है, जिससे विदेशी हितों को लाभ होता है। कई मामलों में, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा वित्त पोषित एनजीओ को ऐसे आख्यानों को बढ़ावा देते हुए पाया गया, जो भारत के राष्ट्रीय हितों के बजाय विदेशी देशों की रणनीतिक इच्छाओं के साथ मेल खाते थे। उदाहरण के लिए, कुछ विदेशी वित्त पोषित एनजीओ को यह प्रचारित करते हुए पाया गया कि कुछ मजहबी या जातीय समूहों को दबाया जा रहा है, जबकि दूसरों को खलनायक के रूप में चित्रित किया जा रहा है, जिससे अनावश्यक तनाव उत्पन्न होते हैं।

कई एनजीओ पर यह आरोप है कि उन्होंने राजनीतिक उद्देश्यों को साधने के लिए मजहबी या जाति-आधारित कार्यों का समर्थन किया। कुछ संगठनों ने चुनावी मौसम या राजनीतिक तनाव के समय विशेष रूप से कथित रूप से अल्पसंख्यक समुदायों के हितों को बढ़ावा देने के लिए विदेशी धन का उपयोग किया।

उदाहरण के लिए, 'जोश' और 'अमन बिरादरी ट्रस्ट', जिसे कथित तौर पर ऑक्सफैम इंडिया से धन प्राप्त हुआ, पर मजहबी समुदायों के बीच तनाव को बढ़ाने वाले सांप्रदायिक मुद्दों को बढ़ावा देने का आरोप लगाया गया। मजहबी पहचान पर राष्ट्रीय एकता को प्राथमिकता देकर, इन संगठनों ने एक विभाजनकारी वातावरण बनाने में योगदान दिया, जिसने भारत की आंतरिक एकता को कमजोर किया और क्षेत्र में विदेशी रणनीतिक लक्ष्यों को बढ़ावा दिया।

इन एनजीओ की वित्तीय संरचना विदेशी हस्तक्षेप की प्रमुख भूमिका को और उजागर करती है। 2015 और 2021 के बीच, इन एनजीओ को मिले पैसे का अधिकांश हिस्सा विदेशी योगदान से आया। एक रिपोर्ट के अनुसार 'केयर इंडिया' को 92% पैसा विदेशी स्रोतों से मिला। 'एन्वायरोनिक्स ट्रस्ट' को 95% धनराशि विदेश से मिली। 'लाइफ' को विदेश से 86% पैसा मिला। 'ऑक्सफैम इंडिया' को 78% विदेशी संस्थाओं द्वारा वित्त पोषित किया गया। ऐसे ही 'सीआईएसएसडी' को 100% वित्त पोषण विदेश से प्राप्त हुआ।

आंकड़े बताते हैं कि ये एनजीओ विदेशी योगदान पर अत्यधिक निर्भर थे, जिससे उनकी जवाबदेही और उद्देश्यों के बारे में चिंताएं पैदा होती हैं। विदेशी धन प्राप्त करना अवैध नहीं है, लेकिन ऐसे धन का उपयोग राष्ट्रीय प्रगति में बाधा डालने, घरेलू व्यवसायों के खिलाफ विदेशी संस्थाओं के साथ षड्यंत्र करने या देश की संप्रभु नीतियों में हस्तक्षेप करने के लिए करना राष्ट्रीय कानून का स्पष्ट उल्लंघन है।

विदेशी धन का उपयोग राजनीतिक या मजहबी एजेंडों को बढ़ावा देने के लिए करना भारत की आंतरिक स्थिरता और संप्रभुता के लिए गंभीर चिंताएं पैदा करता है। बाहरी ताकतें इन एनजीओ के माध्यम से भारत की सामाजिक संरचना को कमजोर करने और विभाजनकारी गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए काम कर रही हैं। ये एनजीओ, विदेशी धन का उपयोग करके, न केवल विकास परियोजनाओं को बाधित कर रहे हैं, बल्कि राजनीतिक ध्रुवीकरण और सांप्रदायिक तनाव पैदा करने का प्रयास कर रहे हैं, जो भारतीय समाज को भीतर से विभाजित करने की कोशिश करते हैं।

इसलिए, यह अत्यंत आवश्यक है कि भारत की नियामक रूपरेखा सुनिश्चित करे कि एनजीओ कानून के अनुसार काम करें और विदेशी योगदान का उपयोग पारदर्शी और कानूनी तरीके से सामाजिक और विकासात्मक उद्देश्यों के लिए किया जाए। ❐

देश सेवा में लगा है सेवाधाम

■ प्रतिनिधि

दिल्ली के मंडोली इलाके में सेवाधाम विद्या मन्दिर जुलाई, 1988 से निरंतर कार्य कर रहा है। सेवाधाम 10 से 18 वर्ष तक की आयु के छात्रों के लिए समरसता की प्रयोगशाला और शोधशाला के रूप में कार्यरत है।

अनेक बोलियों, भाषाओं, खानपान और विविध वेशभूषा के छात्र कक्षा, आवास, भोजनालय तथा खेल के मैदान में सगे भाइयों की तरह एक-दूसरे के सहयोग से सर्वांगीण विकास में सात वर्ष (कक्षा छठी से बारहवीं) तक शिक्षा और दीक्षा में समरस रहकर अपने उद्देश्य को प्राप्त करते हैं। नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम, असम तथा झारखण्ड के छात्र इसके जीते जागते उदाहरण हैं।

सेवाधाम की सहज दिनचर्या में समय पालन, स्वावलम्बन के माध्यम से नेवी, सेना आदि जैसे कठोर प्रशिक्षण में भी छात्र हताश नहीं हुए। जिसमें मोहन सिंह, सुरेन्द्र गिरि, हरेन्द्र टोप्पो, निरंजन महतो, हिंदुसोय मुण्डारी, सुनील कुमार, पंकज, राजेश कुमार, वीरेन्द्र आदि छात्र सेना में अधिकारी बने।

वंचित बंधुओं के बालकों को समाज की मुख्यधारा में समरस करने का काम सेवाधाम बहुत ही सिद्धता से कर रहा है। छात्रों में पूर्वजों की गौरव गाथाएँ तथा उनकी जयन्तियाँ मनाने से छात्र स्वाभिमानी बने हैं। अगर ये छात्र यहाँ न होते तो नक्सलवाद, आतंकवाद जैसी देश की विघटनकारी शक्तियों के साथ होकर राष्ट्र की समरसता से दूर

हो सकते थे।

यहाँ रहने वाले अहिन्दी क्षेत्रों के बालकों में राष्ट्रभाषा के प्रति प्रेम जागृत हुआ है। ताई तुगुंग, हामनी भाग्य जमातिया आदि छात्र अपने क्षेत्र में हिन्दी अधिकारी बने हैं। बंग्लादेश से निकाले गए अनेक चकमा बंधु आज भी अरुणाचल प्रदेश के शरणार्थी शिविर में रहते हैं, जिन्हें भारत की नागरिकता तक नहीं मिली है। इस संवेदनशील मार्मिक विषय को कार्यकर्ताओं ने समझा ही नहीं, बल्कि वहाँ के अनेक छात्र जैसे उत्तम चकमा, निवारण चकमा, ज्योति कुसुम चकमा आदि छात्र सुशिक्षित होकर स्वावलंबी बने हैं। सेवाधाम में पढ़ने वाले शांति जीवन चकमा और मिलन चकमा डॉक्टर बन चुके हैं।

सेवाधाम आने से पूर्व बालकों में क्षेत्रवाद, भाषावाद बहुत अधिक होता है। यहाँ उन्हें व्यापक दृष्टिकोण मिलता है और वे कछ से कछार और कश्मीर से कन्याकुमारी तक को अपना मानने लगते हैं। इसके बाद एक-दूसरे की

भाषा का सम्मान करना एवं अनेक भाषाएँ सीखना यहाँ के छात्रों का स्वभाव बन जाता है।

विद्यालय की दिनचर्या से छात्रों में गुरु-शिष्य परम्परा में श्रमदान, प्रकृति संरक्षण, जल संरक्षण, उद्यान वाटिका आदि विकसित करने की आदत बनी है। जिससे छात्रों ने आनन्द की अनुभूति करके प्रकृति की समरसता का संतुलन बनाया है।

गोधूली, संध्या वंदना जिसमें गीता पाठ, हनुमान चालीसा, रामचरित मानस पाठ पढ़ने से उसके आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण में समन्वय तथा परिवार की परम्पराओं के संरक्षण हेतु संस्कार की आधारशिला सशक्त बनी है। साथ ही आस्तिक भावना का निर्माण हुआ है। जिनके गाँव में गीता, रामायण का कोई नामोनिशान नही था, वहाँ के बालक गीता के कई अध्याय कंठस्थ करके अपने घरों में गीता लेकर गए हैं तथा वहाँ के समाज को धर्मांतरण से सजग कर रहे हैं।

भौगोलिक एकात्मता का जीवन दर्शन यहाँ छात्र को सात वर्ष तक दृष्टिगोचर होता है। आचार्यों के व्यक्तित्व और कृतित्व से बालकों में सदगुणों की प्रेरणा की छाप पड़ती है।

मानवीय गुणों के विकास में आहार की सात्विकता निहित है। इसी आधार पर छात्रों ने सहज रूप से मांसाहार छोड़ा है। उनमें सात्विक रूप से शरीर मन का विकास हुआ है। अपने क्षेत्र में मांसाहार छुड़ा भी रहे हैं। इससे छात्रों में विध्वंसात्क प्रवृति के स्थान पर सृजनात्मक प्रवृति का विकास हुआ है, जो समरस समाज के निर्माण में सहायक है।

सेवाधाम के चिकित्सालय में अस्वस्थ छात्र की सेवा में उनको दवा, परहेज, चिकित्सा यहाँ तक कि उनके वस्त्र आदि को धोने की दैनिक संभाल उसके सहपाठी मित्र बिना किसी सूचना या आदेश के सगे भाई की भांति करते हैं। यहाँ उनकी सामाजिक सोच में बदलाव आया है।

ब्रह्म मुहूर्त बेला में 60 प्रतिशत छात्र स्वयं जगकर सभी छात्रों को जगाकर 5:30 बजे प्राणायाम योग एवं शारीरिक व्यायाम आचार्यों के साथ करते हैं। यह आदत छात्रों के भविष्य की पूँजी बनी है, जिसमें स्वस्थ भारत का भविष्य छिपा है। ❐

सेवाधाम विद्या मंदिर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

गत 27 अक्टूबर 2024, रविवार को सेवा भारती सेवाधाम विद्या मंदिर आवासीय विद्यालय में वार्षिक उत्सव का कार्यक्रम मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती एवं भारत माता के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन व पुष्प अर्पण कर हुआ। सेवा भारती दिल्ली प्रांत के महामंत्री श्री सुशील गुप्ता जी ने कार्यक्रम के अध्यक्ष श्रीमान संदीप जेण कपूर जी सीईओ द हंस फाउंडेशन, विशिष्ट अतिथि श्रीमान रतन हवेलिया जी संरक्षक अपना घर आश्रम दिल्ली, विशिष्ट अतिथि श्रीमान अशोक अग्रवाल जी अध्यक्ष सनातन धर्म मंदिर सूरजमल विहार, मुख्य वक्ता श्रीमान शुकदेव जी संगठन मंत्री सेवा भारती दिल्ली, श्री तरुण गुप्ता जी अध्यक्ष सेवाधाम, श्रीमती इंदिरा मोहन जी संरक्षिका सेवाधाम इत्यादि अतिथियों को मंच पर ले जाकर दीप प्रज्वलन कर, वार्षिक उत्सव का शुभारंभ कराया एवं आये हुए अतिथियों का परिचय दे कर सम्मान रूप में विद्यालय के छात्रों द्वारा बनाया गया पेंटिंग, दीया एवं तुलसी पौधा, अंग वस्त्र दिया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए श्रीमान संदीप जेण कपूर जी ने विद्यार्थियों के अनुशासन की प्रशंसा करते हुए कहा कि राष्ट्र निर्माण में सेवाधाम के छात्रों की महत्वपूर्ण भूमिका है। श्रीमान रतन हवेलिया जी ने कहा कि नर सेवा ही नारायण सेवा है। हमें समाज के आर्थिक तौर से पिछड़े वर्ग के छात्रों को शिक्षित कर आगे बढ़ना होगा। श्रीमान अशोक अग्रवाल जी ने कहा कि, हमें छात्रो में भारतीय संस्कृति के माध्यम से संस्कार निर्माण करना होगा। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्रीमान शुकदेव जी ने कहा कि, सेवाधाम शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करता है।

संपूर्ण देश में पिछड़े क्षेत्र के छात्रों को लाकर हम शिक्षित करते हैं। यह एक पुण्य का कार्य है। इस कार्य में समाज के हर एक वर्ग को सहयोग करना होगा। विद्यालय का वृत विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री विमल कुमार सिंह

जी ने रखा। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में मुख्य रूप से सामूहिक गीत, गणेश वंदना, स्वागत नृत्य, हास्य संस्कृत नाटक, पोम पोम ड्रिल, मार्शल आर्ट, वंदे मातरम, फ्यूजन नृत्य (झारखंड, बिहार, नॉर्थ ईस्ट, गरबा), एजुकेशनल थीम डांस, योगासन छात्रों द्वारा प्रस्तुत किया गया। आए हुए अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन विद्यालय के अध्यक्ष श्रीमान तरुण गुप्ता जी ने किया।

कार्यक्रम में मुख्य से विद्यालय के प्रबंधक श्री ओंकार नाथ मिश्र, सह प्रबंधक श्रीमती रेखा गर्ग जी, डॉ एस.पी. सिंह जी, सेवाधाम के उपाध्यक्ष श्री ताराचंद तायल जी, श्री प्रमोद अग्रवाल जी, श्री चक्रेश जी, द हंस फाउंडेशन से श्री सुदीप जी इत्यादि समाज सेवी व प्रबुद्ध जन रहे।कार्यक्रम का संचालन विद्यालय के शिक्षक श्री अनिल कुमार पाण्डेय एवं विद्यालय के छात्र भैया अमित ध्यानि, भैया भीम थापा, भैया रूपेश, भैया खूटीग सू ने किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान से हुआ। कार्यक्रम में आए हुए सभी अतिथियों को भेंट स्वरूप तुलसी पौधा एवं सेवा भारती से संबंधित साहित्य प्रदान किया गया। सभी अतिथियों ने भोजन प्रसाद ग्रहण किया। ❐

45,411 स्थानों पर 72, 354 शाखाएं

■ प्रतिनिधि

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल की दो दिवसीय बैठक का 26 अक्टूबर को समापन हो गया। दीनदयाल गौ विज्ञान अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र, गऊ ग्राम परखम, मथुरा में आयोजित बैठक के समापन अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबाले जी ने पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि संघ व्यक्ति निर्माण का कार्य करता है और यह प्रक्रिया निरंतर जारी है। उन्होंने कहा कि शाखा में आने वाले व हर समूह के कार्यकर्ताओं के लिए प्रशिक्षण वर्ग आयोजित होता है, इस वर्ष कार्यकारी मंडल बैठक से पूर्व दो दिन का प्रांत टोली का प्रशिक्षण वर्ग हुआ। साथ ही वर्तमान संदर्भ और संघ से जुड़े विविध आयामों के कार्य विस्तार पर भी चर्चा हुई है। बैठक में आने वाले दिनों में हमें क्या-क्या करना है, नये विचार कैसे जुड़ेंगे, समाज के नये व्यक्तियों को कैसे जोड़ना है, विभिन्न आयु वर्ग के लोगों को जोड़ना और जुड़े हुए बंधुओं से कार्य विस्तार कैसे हो, इसकी भी चर्चा बैठक में हुई है।

सरकार्यवाह जी ने बताया कि कार्यकारी मंडल की बैठक में इस वर्ष मार्च में सम्पन्न हुई प्रतिनिधि सभा की समीक्षा की गयी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने इस वर्ष अपने 99 वर्ष पूर्ण करते हुए शताब्दी वर्ष में प्रवेश किया है। आगामी विजयादशमी पर कैसे कार्यक्रम करने हैं, इस पर विचार किया है। स्वयंसेवक पंच परिवर्तन (स्व आधारित जीवन शैली, सामाजिक समरसता, कुटुंब प्रबोधन, पर्यावरण और नागरिक कर्तव्य) के विषयों को लेकर समाज के बीच जाएंगे।

पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए श्री दत्तात्रेय होसबाले। साथ में हैं श्री सुनील आंबेकर

कार्य विस्तार की दृष्टि से 45, 411 स्थानों पर 72, 354 शाखाएं चल रही हैं। इसमें पिछले वर्ष की तुलना में 3626 स्थान बढ़ गए हैं और 6645 शाखाएं बढ़ी हैं। ऐसे ही सप्ताह में होने वाले साप्ताहिक मिलन की संख्या 29369 रही, इसमें 3147 की वार्षिक वृद्धि हुई है।

समाज में परिवर्तन कैसे होगा, इसकी चिंता स्वयं करनी है।

उन्होंने बताया कि संघ कार्य की प्रथम इकाई शाखा है। कार्य विस्तार की दृष्टि से 45, 411 स्थानों पर 72, 354 शाखाएं चल रही हैं। इसमें पिछले वर्ष की तुलना में 3626 स्थान बढ़ गए हैं और 6645 शाखाएं बढ़ी हैं। ऐसे ही सप्ताह में होने वाले साप्ताहिक मिलन की संख्या 29369 रही, इसमें 3147 की वार्षिक वृद्धि हुई है। उन्होंने बताया कि जहां शाखा नहीं लगती, ऐसे स्थानों पर मासिक संघ मंडली का काम चलता है। इस वर्ष 11, 382 स्थानों पर संघ मंडली है, इसमें 750 स्थानों की वृद्धि हुई है। ऐसे कुल 1, 13, 105 इकाइयों के रूप में वर्तमान में संघ कार्य का विस्तार है। अगले वर्ष प्रतिनिधि सभा

की बैठक बेंगलूरू में आयोजित होगी और प्रतिनिधि सभा तक कार्य विस्तार में वृद्धि होगी।

उन्होंने कहा संघ कार्यकर्ताओं के चरित्र निर्माण का कार्य करता है। चरित्र निर्माण की यह पद्धति केवल चर्चाओं में नहीं वरन् आचरण में दृष्टिगोचर होनी चाहिए और विगत वर्षो से समाज को इसका अनुभव भी हो रहा है। देश में आपदा के समय स्वयंसेवक मोर्चा संभालते हैं। इस वर्ष भी पश्चिम बंगाल में तारकेश्वरी नदी में आयी बाढ़ में 25, 000 परिवारों की स्वयंसेवकों ने राहत शिविरों में सेवा की। उड़ीसा बाढ़ के दौरान 4 हजार परिवारों को स्वास्थ्य और भोजन आदि सहायता पहुंचायी। जुलाई में वायनाड़ और कर्नाटक में भूस्खलन में एक-एक हजार स्वयंसेवक लगे और सहायता कार्य किए। बड़ोदरा, जामनगर, द्वारका बाढ़ में भी स्वयंसेवकों ने भोजन आदि की व्यवस्था की। साथ ही आपदा में 600 मृतकों का अंतिम संस्कार भी कराया, केवल हिन्दू ही नहीं, बल्कि विभिन्न समुदायों के मृतकों का उनकी परंपरा के अनुसार अंतिम संस्कार कराया।

जहां शाखा नहीं लगती, ऐसे स्थानों पर मासिक संघ मंडली का काम चलता है। इस वर्ष 11, 382 स्थानों पर संघ मंडली है, इसमें 750 स्थानों की वृद्धि हुई है। ऐसे कुल 1, 13, 105 इकाइयों के रूप में वर्तमान में संघ कार्य का विस्तार है।

सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले जी ने कहा कि 'स्व' का कार्य मिट्टी की सुगंध का कार्य है। महात्मा गांधी ने भी बोला था स्वराज्य। 'स्व' का अर्थ 'स्वाधीनता', राष्ट्रीय स्वत्व है। यहां की अपनी परम्परा, अपनी सभ्यता, इसके अनुभवों के साथ आचरण करना है, आधुनिकता का पालन करना है, आधुनिकता में भी 'स्व' को नहीं भूलना है। उन्होंने कहा पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होल्कर की जयंती का यह 300वां वर्ष है। सामाजिक जाग्रति, मंदिरों का जीर्णोद्धार, कुशलतापूर्वक शासन करना यह दर्शाता है कि 300 वर्ष पूर्व भी मातृशक्ति जनता के लिए और जनकार्य के लिए शासन चलाने में सक्षम थी।

सरकार्यवाह जी ने कहा कि ड्रग के प्रति आकर्षण नहीं होना चाहिए। संघ का आग्रह संस्कार, समरसता, शिक्षा एवं स्वास्थ्य पर है। एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि सभी इंटरनेट प्लेटफॉर्म पर जो कुछ दिखाया जा रहा है, उसमें से बहुत कुछ सामाजिक नहीं है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता होनी चाहिए, पर इस पर एक नियामक भी बनाने की जरूरत है। सरकार तो इस ओर ध्यान देगी ही, समाज को भी संस्कारों में वृद्धि करके इस ओर ध्यान देना चाहिए। वहीं हाल ही में बांग्लादेश घटनाक्रम पर उन्होंने कहा कि हिन्दू समाज को वहां से पलायन करने की जरूरत नहीं है। वे वहीं डटे रहें, वह उनकी भूमि है, बांग्लादेश में हमारी शक्तिपीठ हैं। उन्होंने कहा कि विश्वभर में हिन्दू रहते हैं। जहां भी संकट आता है, हिन्दू भारत की ओर देखता है। वक्फ बोर्ड पर उन्होंने कहा कि जेपीसी जो भी निर्णय लेगी, आगे सरकार जनभावनाओं को ध्यान में रखकर कार्य करेगी। श्रीकृष्ण जन्मभूमि विषय पर कहा कि मामला न्यायालय में है, न्यायालय निर्णय लेगा। अयोध्या की तरह इस पर कुछ करने की जरूरत नहीं है, समाज तय करेगा। हम समाज के साथ हैं।

पत्रकार वार्ता में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख श्री सुनील आंबेकर, सह प्रचार प्रमुख श्री नरेन्द्र ठाकुर और श्री प्रदीप जोशी उपस्थित रहे। ❐

सामुदायिक रसोई की शुरुआत कर नानक देव मिटाए थे भेदभाव

■ पूज्य श्री सुधांशुजी महाराज

गुरु नानक जयंती सिख समाज के लिए एक महत्वपूर्ण त्योहार है। वे सिख धर्म के पहले गुरु तथा एक भारतीय आध्यात्मिक शिक्षक भी थे। इसलिए यह पर्व सिख धर्म के लिए महत्वपूर्ण है, जिसे गुरुपर्व के नाम से जाना जाता है। सिख इसे पूरी दुनिया में बहुत खुशी और उत्साह के साथ मनाते हैं। नानक देव जी की शिक्षाएँ-भक्ति भजनों के माध्यम से व्यक्त की गईं, ईश्वरीय नाम पर ध्यान के माध्यम से पुनर्जन्म से मुक्ति पर भी जोर देती हैं। सिखों के बीच उन्हें पंजाबी भक्ति भजनों के सर्वोच्च गुरु के रूप में विशेष स्नेह प्राप्त है। बताते हैं कि भारतीय धार्मिक भिक्षुओं की परंपरा के अनुसार, उन्होंने भारत के मुस्लिम और हिंदू धार्मिक केंद्रों की यात्रा की तथा देश की सीमाओं से परे स्थानों की भी। इसलिए उनके चारों भजनों में मिले संदर्भों से पता चलता है कि नानक देव बाबर मुगल शासक आक्रमणकारी द्वारा सैदपुर और लाहौर पर किए गए हमलों के समय मौजूद थे। उनके जीवन के शेष वर्ष इसी में बीते।

कहा जाता है कि मध्य पंजाब का एक गांव करतारपुर वास्तव में नानक के सम्मान में एक धनी प्रशंसक द्वारा बसाया गया था। जहाँ पर अपने अंतिम अवधि के दौरान उन्होंने नए सिख समुदाय की नींव रखी थी। नानक को एक गुरु, धार्मिक सत्य के एक प्रेरित शिक्षक के रूप में मान्यता दी गई थी। कहते हैं कि भारत की परंपरा के अनुसार, जिन शिष्यों ने उन्हें अपना गुरु स्वीकार किया था, जिनमें से कई परिवार आज भी मौजूद है। सिख धर्म के पहले गुरु होने के कारण सिख उन्हें सिख धर्म का संस्थापक मानते हैं। सिख धर्म का पालन करने वालों के लिए गुरु नानक जयंती बहुत बड़ा महापर्व है। वे लोग गुरु नानक देव को याद करने और उनका आभार प्रकट करने के लिए इस दिन को विशेष रूप से मनाते हैं। मानवता के प्रति गुरु नानक जी के महान योगदान को लोग आज भी बहुत सम्मान करते हैं। इसके अलावा देश के कई भागों में भी उनके जन्मदिन को सार्वजनिक अवकाश के रूप में मनाया जाता हैं।

सिख धर्म पूरी दुनिया में फैला हुआ है, इसलिए इस दिन को लोग बहुत खुशी और उल्लास के साथ मनाते हैं। गुरु नानक ही थे जिन्होंने लोगों के लिए लंगर (सामुदायिक रसोई) की शुरुआत

की। ताकि समाज में व्याप्त असमानता जाति, पंथ, धर्म, लिंग, वर्ग आदि के आधार पर मतभेदों को खत्म कर मानव के बीच भाईचारे और प्रेम स्थापित किया जा सके।

गुरुपर्व का उत्सव उनके लिए एक सच्ची श्रद्धांजलि से कम नहीं है, जिसने अपना पूरा जीवन लोगों के कल्याण के लिए समर्पित कर दिया। इसके अलावा भी उन्होंने दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने के लिए शिक्षा का एक मूल्यवान सन्देश भी दिया। यही कारण है कि सिख धर्म के अनुयायी प्रत्येक वर्ष कार्तिक महीने की पूर्णिमा के दिन गुरुपर्व मनाते हैं। तीन दिनों तक लोग इस उत्सव का आनंद लेते हैं। त्योहार की तैयारियाँ घरों की सफाई और मालाओं, रोशनी और अन्य चीज़ों से सजावट से शुरू होती हैं। इस दिन गुरुद्वारों को खूबसूरती से सजाया जाता है। इसके अलावा, सिख भक्त सुबह प्रभात फेरी भी निकालते हैं, तथा आस-पास के इलाकों में छोटे-बड़े जुलूस भी निकालते हैं। नानक देव की शिक्षाओं का पालन करते हुए, सिख इस दिन लोगों को एक साथ मुफ्त में भोजन कराने के लिए लंगर का आयोजन भी करते हैं।

कहा जाता है कि मध्य पंजाब का एक गांव करतारपुर वास्तव में नानक के सम्मान में एक धनी प्रशंसक द्वारा बसाया गया था। जहाँ पर अपने अंतिम अवधि के दौरान उन्होंने नए सिख समुदाय की नींव रखी थी। नानक को एक गुरु, धार्मिक सत्य के एक प्रेरित शिक्षक के रूप में मान्यता दी गई थी। कहते हैं कि भारत की परंपरा के अनुसार, जिन शिष्यों ने उन्हें अपना गुरु स्वीकार किया था, जिनमें से कई परिवार आज भी मौजूद है।

गुरु नानक देव ने लोगों को प्रेम और शांति के साथ रहना सिखाया तथा भेदभाव को मिटाने एवं लोगों को एकजुट रहने का भी सन्देश दिया ताकि सामुदायिक रसोई के माध्यम से लोग जाति, वर्ग और धर्म की परवाह किए बिना शांति से भोजन करने के लिए एक साथ आ सके। इस प्रकार गुरुपर्व मानवता के लिए काम करने वाले महान गुरु नानक देव की जयंती का प्रतीक है।

नानक देव समाज में कई सुधार किये, जिसके कारण उन्हें याद किया जाता है। जैसे समाज में व्याप्त भेद-भाव और बुराइयों के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाकर समाज में आडंबरों, पाखंडों, और कुरीतियों का उन्होंने विरोध किया तथा जबरन थोपे जाने वाले रीति-रिवाजों जैसे सतीप्रथा, बलिप्रथा, मूर्ति-पूजा, पर्दाप्रथा को भी अस्वीकार किया। इसके अलावा लंगर की शुरुआत की ताकि छोटे-बड़े के बीच भेद-भाव मिटाकर समाज में मानवता और समानता का संदेश फैलाया जा सके, इसके लिए उन्होंने चारों दिशाओं में चार प्रमुख आध्यात्मिक यात्राएं भी कीं। भारत, अफ़ग़ानिस्तान, और अरब के कई स्थानों का उहोंने भ्रमण किया। अंत में उन्होंने करतारपुर नामक एक नगर बसाकर उसमें एक बड़ी धर्मशाला बनवाई। तो आइये! नानक देव जी द्वारा दिए गए संदेशों का अनुशरण करें। ❐

(संस्थापक, विश्व जागृति मिशन)

पूर्णिमा की रात

पूर्णिमा की वह रात थी और मेरी फसल चांदनी से पूरी तरह से नहाई हुई थी। मैं भी रात को फसल की निगरानी करने निकल पड़ा लेकिन जैसे ही मैं खेत के बीच में पहुंचा मुझे एक बहुत बड़ी परछाई दिखाई दी और आवाज सुनाई दी। मैं बड़ा साहस करके परछाई के पास गया तो मुझे एक बूढ़ा आदमी दिखाई दिया। वह उस ठंड में जोर-जोर से हाफ रहा था। उस बूढ़े व्यक्ति ने अपना नाम अशोक बताया तथा उसने यह भी बताया कि वह पास के ही गांव में रहता है।

फिर मैंने उससे इस ठंड में घर के बाहर आने का कारण पूछा तो उसने बताया कि उसके बच्चों ने उसको इस भारी ठंड में घर से निकाल दिया है। मैं उसको अपने घर ले आया और सुबह होते ही उसके गांव जाकर उसके बच्चों के खिलाफ पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करवा दी। ❐

सामाजिक समरसता के सूत्रधार : गुरुनानक

■ स्वाति पाठक 'स्वाति'

गुरु नानक का जन्म 15 अप्रैल 1469 को दिल्ली सल्तनत के लाहौर प्रांत में राय भोई दी तलवंडी गाँव द्धवर्तमान ननकाना साहिब, पंजाब, पाकिस्तानऋ में खत्री पंजाबी वंश में हुआ। वैसे उनका जन्म भारतीय कार्तिक महीने में हुआ था, जिसे पंजाबी में कत्तक के नाम से जाना जाता है।

गुरु नानक ने लोगों को इक ओंकार का संदेश दिया, जो उनकी हर रचना में निवास करता है और शाश्वत सत्य का गठन करता है। उन्होंने समानता, भ्रातृ प्रेम, भलाई और सदाचार पर आधारित एक आध्यात्मिक और सामाजिक पंथ स्थापित किया।

गुरु नानक के शब्द सिख धर्म के पवित्र धार्मिक ग्रंथ गुरु ग्रंथ साहिब में 974 काव्य भजनों या शब्दों के रूप में दर्ज हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख प्रार्थनाएँ हैं। सिख धार्मिक विश्वास का हिस्सा है कि नानक की पवित्रता, दिव्यता और धार्मिक अधिकार की भावना बाद के नौ गुरुओं में प्रत्येक पर उतरी थी जब उन्हें गुरु पद सौंपा गया था।

परिवार और प्रारंभिक जीवन

नानक के माता-पिता, जिनमें पिता कल्याण चंद दास बेदी (जिन्हें आमतौर पर मेहता कालू) और माता त्रिप्ता (दोनों हिंदू खत्री थे) व्यापारी के रूप में कार्यरत उनके पिता, विशेष रूप से, तलवंडी गाँव में फसल राजस्व के लिए स्थानीय पटवारी (लेखाकार) थे। नानक के दादा का नाम शिव राम बेदी था और उनके परदादा राम नारायण बेदी थे।

नानक के जन्म और जीवन के प्रारंभिक वर्षों में कई घटनाएँ घटीं, जिनसे पता चला कि नानक को ईश्वरीय कृपा प्राप्त थी। उनके जीवन पर टिप्पणियाँ छोटी उम्र से ही उनके खिलते हुए ज्ञान का विवरण देती हैं। उदाहरण के लिए पाँच वर्ष की आयु में नानक के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने दिव्य विषयों में रुचि दिखाई थी। सात साल की उम्र में उनके पिता ने उन्हें रिवाज के अनुसार गाँव के स्कूल में दाखिला दिला दिया। उल्लेखनीय लोककथाओं में बताया गया है कि एक बच्चे के रूप में नानक ने अपने शिक्षक को वर्णमाला के पहले अक्षर के अंतर्निहित प्रतीकात्मक का वर्णन करके चकित कर दिया था, जो ईश्वर के दैवीय रूप को दर्शाता था। उनके बचपन की अन्य कहानियाँ नानक के बारे में अजी चमत्कारी घटनाओं का उल्लेख करती हैं, जैसे कि राय बुलार द्वारा देखी गई, जिसमें सोते हुए बच्चे के सिर को कठोर धूप से एक पेड़ की छाया, एक विषैले कोबरा द्वारा छायांकित किया गया था ।

नानक की इकलौती बहन नानकी उनसे पाँच साल बड़ी थीं। 1475 में, उन्होंने शादी की और सुल्तानपुर चली गईं। नानकी के पति जय राम, दिल्ली सल्तनत के लाहौर के गवर्नर दौलत खान की सेवा में मोदीखाना (गैर-नकद रूप में एकत्र राजस्व के लिए एक गोदाम) में कार्यरत थे, जहाँ राम नानक को नौकरी दिलाने में मदद करते थे। नानक सुल्तानपुर चले गए, और 16 साल की उम्र में मोदीखाना में काम करना शुरू कर दिया।

युवावस्था में नानक ने मूल चंद (उर्फ मूला) और चांदो रानी की बेटी सुलखानी से विवाह किया। उनकी शादी 24 सितंबर 1487 को बटाला शहर में हुई थी। उनके दो बेटे हुए श्री चंद और लखमी चंद (या लखमी दास)। नानक लगभग 1500 तक सुल्तानपुर में रहे, जो उनके लिए एक प्रारंभिक समय

शेष पेज 17 पर...

भारतीय विवाह परंपरा

■ प्रो. दयाल सिंह पँवार

परिवार सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन का मूल आधार है और विवाह उसकी आधार-शिला। विवाह के बाद जिस परिवार का निर्माण होता है, वही मनुष्य-निर्माण की प्रथम पाठशाला बनती है और माता-पिता वहाँ प्रथम शिक्षक की भूमिका में होते हैं। विश्व के प्रत्येक समाज ने सभ्यता के विकास के साथ ही विवाह-व्यवस्था को स्वीकार किया और अपने चिन्तन और संस्कृति के अनुरूप इसको व्यवस्थित स्वरूप प्रदान किया। कहीं पर इसे अनुबंध और समझौते के रूप में स्वीकार किया गया, तो अन्यत्र स्त्री-पुरुष के एक विशेष संबंध के रूप में इसे मान्यता मिली। भारतीय चिन्तन में विवाह को संस्कार के रूप में स्वीकार किया गया। यह संस्कार मानव-जीवन को दायित्ववान और परिपक्व बनाने के लिए आवश्यक है।

विवाह के निहितार्थ

विवाह शब्द संस्कृत में 'वि' उपसर्ग पूर्वक 'वह' धातु में 'घञ्' प्रत्यय से निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ है विशिष्ट रूप से दायित्व का वहन करना। वस्तुतः जीवन के इस पड़ाव में वर-वधू नए विशिष्ट दायित्व का वहन करने की भूमिका के लिए अपने आपको तैयार करते हैं। इसके लिए पाणिग्रहण आदि शब्दों का भी प्रयोग होता है। पाणि शब्द का अर्थ हाथ है। माता-पिता अपनी पुत्री का हाथ वर के हाथ में सौंप देते हैं। अधिक गहराई से विचार करें तो पाणिग्रहण संस्कार के बाद दोनों जीवन भर एक-दूसरे का हाथ थामते हैं अर्थात् एक-दूसरे को सहारा देते हैं। एक विशिष्ट धार्मिक अनुष्ठान के रूप में यह संस्कार संपन्न होता है, जिसमें सप्तपदी या 7 फेरों के बाद वर-वधू पति-पत्नी के रूप में धार्मिक तथा सामाजिक स्वीकृति प्राप्त करते हैं।

पारिवारिक तथा सामाजिक उत्सव

भारतीय परिवेश में रीतियों और परम्पराओं की विविधता के कारण विवाह की सामान्य क्रियाओं में कुछ भेद भले ही होते हैं, किन्तु सामान्य रूप से आधारभूत क्रियाकलापों में एकता व समानता भी है। भारत के अनेक भागों में यह उत्सव दो-तीन दिन या और अधिक समय तक चलता है। विवाह से पूर्व कई स्थानों पर सगाई, वाग्दान या गौना होता है, जिससे वर पक्ष और

कन्या पक्ष आपसी सहमति स्थापित कर लेते हैं। विवाह से पूर्व कन्या पक्ष तथा वर पक्ष दोनों के घरों पर अपनी रीति के अनुसार कीर्तन, हल्दी आदि अनेक कार्यक्रम होते हैं और वरयात्रा के बाद तो दोनों परिवारों के उत्सव एकरूप हो जाते हैं। सामान्य रूप से मंगल-स्नान, हल्दी, गणेश-पूजन, द्वारपूजन, तिलक, वरमाला, हस्तपीतकरण, मर्यादाकरण, पाणिग्रहण, ग्रंथिबन्धन, प्रतिज्ञाएं, प्रायश्चित, शिलारोहण, सप्तपदी, शपथ, आश्वासन आदि ये विविध क्रियाकलाप विवाह के विशिष्ट अंग हैं। विवाह संपन्न होने के बाद भी कुछ अन्य परम्पराओं का निर्वहण कुछ परिवारों में होता रहता है। ये वैवाहिक उत्सव परिवार और समाज में उत्साह और उमंग का संचार करते हैं। भारत में विवाह मात्र दो व्यक्तियों का नहीं, बल्कि दो परिवारों का भी संबंध है।

धार्मिक अनुष्ठान के रूप में विवाह

विवाह की उत्सवधर्मिता के विवेचन के बाद यह स्पष्ट हो जाता है कि विशेष रूप से भारतीय परम्परा में विवाह एक धार्मिक अनुष्ठान भी है। 16 संस्कारों में से एक महत्त्वपूर्ण संस्कार के रूप में हम पहले ही विवाह का उल्लेख कर चुके हैं। विवाह के विविध चरण धार्मिक कर्मकाण्डों में निबद्ध हैं। विवाह के बाद ही व्यक्ति को धार्मिक यज्ञों के अनुष्ठानों का अधिकार प्राप्त होता है। यही कारण था कि सीताजी की अनुपस्थिति में श्रीराम को अश्वमेध यज्ञ के अनुष्ठान के लिए उनकी प्रतिमा को यज्ञ में रखना पड़ा। पाणिनि का एक सूत्र है 'पत्युर्नो यज्ञ-संयोगे' इस सूत्र में पत्नी शब्द की सिद्धि करते हुए वे बताते हैं कि पत्नी शब्द का प्रयोग किसी स्त्री के लिए तभी हो सकता है, जब पति के यज्ञ करने पर उस स्त्री को भी यज्ञ का फल प्राप्त हो।

विवाह के प्रयोजन

भारतीय परम्परा में जीवन को 4 आश्रमों में विभक्त किया गया हैख्र ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास। ब्रह्मचर्य आश्रम में विद्या प्राप्त करने के बाद 'प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सी:' अर्थात् सन्तानोत्पत्ति के सूत्र को मत तोड़ना। आचार्य की ऐसी आज्ञा का पालन करने के लिए समावर्तन संस्कार के बाद स्नातक विवाह करके गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करते थे। शास्त्रों में गृहस्थ आश्रम का महत्व बताते हुए कहा भी गया है कि जैसे वायु का आश्रय लेकर सब प्राणी जीवित रहते हैं, वैसे ही गृहस्थाश्रम पर ही सारे आश्रम आधारित हैं। अत: स्पष्ट है कि विवाह का यह सामाजिक प्रयोजन भी है कि विवाह के बाद गृहस्थ सारी व्यवस्था को बनाए रखने में अपना योगदान दे। 'अर्ध भार्या मनुष्यस्य' ऐसा कहकर शास्त्रकारों ने पत्नी को पति की अर्धांगिनी घोषित किया है। 'न गृहिणी गृहमित्याहुर्गृहिणी गृहमुच्यते' अर्थात् गृहिणी के बिना घर घर नहीं है, वास्तव में गृहिणी को ही गृह स्वरूप बताया गया है। भारतीय चिन्तन के अनुसार हर व्यक्ति पर 3 ऋण चढ़े रहते हैं- देव-ऋण, ऋषि-ऋण और पितृ-ऋण। इन ऋणों में पितृ-ऋण को विवाह के बाद सन्तान उत्पन्न करके ही उतारा जा सकता है। सन्तान ही पितृ-कर्म श्राद्ध आदि से पितरों का उद्धार कर सकती है। इसके अतिरिक्त विविध सामाजिक दायित्वों के निर्वहन के साथ ही विवाह के माध्यम से अपनी स्वच्छंदता पर भी नियंत्रण स्थापित करना भी इसका अन्य प्रयोजन है।

विवाह के विविध रूप

धर्मशास्त्र के मर्मज्ञ पण्डितों ने विवाह की इस पद्धति का शास्त्रीय ग्रंथों में पर्याप्त उल्लेख किया है। वहाँ वर-वधुओं के लक्षण, विवाह का विधान, विवाह के प्रकार आदि विविध पक्षों पर व्यापक चर्चा हुई है। महाभारत में उल्लेख आता है कि श्वेतकेतु और कुछ सीमा तक दीर्घतमा जैसे ऋषियों ने विवाह की इस पद्धति को व्यवस्थित तथा स्थिर स्वरूप प्रदान किया। यूँ तो राजा-महाराजाओं के परिवारों तथा संभ्रांत कुलों में बहुपत्नी-प्रथा भी प्रचलन में रही, किन्तु विवाहों के इन रूपों को आदर्श नहीं माना गया। श्रीराम के मर्यादा-पुरुषोत्तम होने में यह भी एक महत्त्वपूर्ण मर्यादा रही है। समाज में निर्मित परिस्थितियों के कारण ही विद्वान शास्त्रों की रचना करते हैं और उचित मार्गनिर्देशन भी प्रदान करते हैं। शास्त्रकारों ने समाज में प्रचलित 8 प्रकार के विवाहों का उल्लेख किया है। ये हैं-ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, आसुर, गान्धर्व, राक्षस और पैशाच। इनमें ब्राह्म विवाह को सर्वोत्तम कहा गया है। इसमें पिता वेदज्ञ विद्वान् को सत्कारपूर्वक आमंत्रित कर स्वयं कन्या प्रदान करता है। दैव विवाह में यज्ञ करने वाले ऋत्विज को कन्या दिए जाने का विधान है। गुणवान् वर से एक या दो पशुओं के जोड़े लेकर जब पिता धर्मानुसार अपनी कन्या प्रदान कर देता है तब वह आर्ष विवाह कहलाता है। प्रजापति ब्रह्मा की सृष्टि को आगे बढ़ाने में सहायता देने के कारण प्राजापत्य नाम दिया गया है। इसमें पिता वर और कन्या को आदेश देते हैं कि तुम मिलकर धर्म का पालन करो। इस प्रकार वर का पूजन करके

पिता उसे अपनी कन्या प्रदान करता है। इस विवाह में वर द्वारा कन्या के पिता से कन्या की याचना की भी परम्परा रही है। आसुर विवाह को वशिष्ठ द्वारा मानुष विवाह भी कहा गया है। इसमें वर पक्ष कन्या और कन्या पक्ष को यथाशक्ति धन प्रदान करके स्वेच्छा से विवाह करता है।

गान्धर्व विवाह में पुरुष तथा स्त्री परस्पर प्रणय के वशीभूत होकर परिणय-सूत्र में बँधते हैं। यद्यपि शास्त्रकारों ने इसे उत्तम नहीं माना, किन्तु कविकुलगुरु कालिदास ने अपने नाटक में इसका अनुमोदन किया है और वात्स्यायन ने तो इसे प्रशंसनीय ही माना है। आज के प्रेम-विवाह इसी कोटि में रखे जा सकते हैं। राक्षसी विवाह में वर पक्ष के लोगों को मार-पीटकर बलपूर्वक रोती-चिल्लाती कन्या का हरण किया जाता है और फिर उससे यज्ञादिपूर्वक विवाह किया जाता है। जिस विवाह में छल-कपट के साथ सोई या असावधान कन्या का हरण किया जाए वह पैशाची विवाह है। इसे अत्यन्त निकृष्ट कोटि में रखा गया है। रामायण, महाभारत तथा अन्य प्राचीन ग्रंथों से स्वयंवर-प्रथा के भी पर्याप्त उल्लेख प्राप्त होते हैं, जिनमें कन्या योग्य वर का वरण करती थी।

आधुनिक परिवेश में चुनौतियाँ

आधुनिकता के इस परिवेश में विवाह-पद्धति तथा उसके अन्तर्गत क्रिया-कलापों में सामयिक परिस्थितियों के कारण पर्याप्त परिवर्तन हुए हैं। स्वतंत्रता के बाद 1955 में हिन्दू-विवाह अधिनियम आया, जो अनेक अल्पसंख्यक समुदायों पर भी लागू होता है। मुस्लिम समुदाय का अपना कानून है। व्यवस्था में परिवर्तन स्वाभाविक होते हैं, किन्तु अत्यधिक धन का अपव्यय, दहेज-प्रथा, विवाह-विच्छेद के बढ़ते हुए प्रकरण विवाह-व्यवस्था के सामने बड़ी चुनौतियाँ उपस्थित कर रहे हैं।

मुस्लिम समुदाय में प्रचलित 3 तलाक को संसद द्वारा निरस्त कर दिया गया है, किन्तु बहुविवाह आदि प्रथाएं उस समुदाय में अभी भी वैध हैं, जो एक चुनौती है। तलाक के बढ़ते हुए मामलों से आधुनिक समाज में विवाह गुड्डे-गुड़ियों के खेल जैसा बन गया है। इससे परिवारों की पीड़ित सन्तानों पर अत्यधिक दुष्प्रभाव पड़ रहा है। इस दृष्टि से प्रबुद्ध वर्ग को समाज के मार्गदर्शन के लिए आगे आना होगा, जिससे समाज में विखण्डन की प्रवृत्ति भयावह रूप धारण न कर सके।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट होता है कि यद्यपि प्रजनन तो सभी जीवों में होता है, किन्तु विवाह एक ऐसी पद्धति है, जो अन्य जन्तुओं से मानव को भिन्न करती है। विवाह-पद्धति का प्रणयन करके मानव-समाज ने अपने आपको अधिक सभ्य और सुसंस्कृत बनाया है। वास्तव में यह पद्धति हमारे अस्तित्व का आधार बन गई है। इसके अभाव में मानव-समाज अव्यवस्थित और निरंकुश होकर आपस में ही कलह और द्वेष के कारण नष्ट हो सकता है, इसमें कोई सन्देह नहीं। अतः किसी भी परिस्थिति में इसका संरक्षण करना व्यक्ति और समाज के अस्तित्व के लिए नितांत आवश्यक है। ❐

(लेखक श्रीलाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में व्याकरण विभाग में आचार्य हैं)

पेज 14 का शेष...

सामाजिक समरसता के सूत्रधार : गुरुनानक

था। जैसा कि पुरातन जन्मसाखी से पता चलता है, और उनके भजनों में सरकारी संरचना के उनके कई संकेत, संभवतः इस समय प्राप्त हुए।

लगभग 55 वर्ष की आयु में, नानक करतारपुर में बस गए, सितंबर 1539 में अपनी मृत्यु तक वहीं रहे। इस अवधि के दौरान, वे अचल के नाथ योगी केंद्र और पाकपटन और मुल्तान के सूफी केंद्रों की छोटी यात्राओं पर गए। अपनी मृत्यु के समय तक, नानक ने पंजाब क्षेत्र में कई अनुयायियों को प्राप्त कर लिया था। नानक के अनुयायियों को लोगों द्वारा करतारी (जिसका अर्थ है करतारपुर गाँव से ताल्लुक रखने वाले लोग) कहा जाता था।

नानक ने भाई लहना को उत्तराधिकारी गुरु नियुक्त किया और उनका नाम बदलकर गुरु अंगद रख दिया। अपने उत्तराधिकारी की घोषणा करने के कुछ समय बाद नानक की मृत्यु 22 सितंबर 1539 को करतारपुर में 70 वर्ष की आयु में हो गई। सिख संतों के अनुसार उनका शरीर कभी नहीं मिला। जब झगड़ते हुए हिंदुओं और मुसलमानों ने उनके शरीर को ढँकने वाली चादर को खींचा, तो उन्हें इसके बजाय फूलों का ढेर मिला और इस तरह नानक का सरल विश्वास, समय के साथ एक धर्म में बदल गया। ❐

भारत की विशिष्ट कुटुंब परंपरा

■ मानवेंद्र

भारत में कुटुम्ब व्यवस्था का विशेष महत्व है। यह व्यवस्था अनादिकाल से चलती आ रही है। यहाँ कुटुम्ब के आधार पर पूरा समाज जीवन चलता है। माता-पिता, दादा-दादी, चाचा-चाची, पुत्र-पुत्रियाँ, पोते-पोतियाँ सब मिलकर कुटुम्ब बनाते हैं। अपने यहाँ इसे गृहस्थाश्रम कहा गया है। विद्यार्थी, वानप्रस्थी, योगी, साधक, सन्यासी, अतिथि, भिक्षुक सभी के योगक्षेम की चिंता गृहस्थ करता है।

पश्चिम में फैमिली 'सोशल कॉन्ट्रेक्ट' के आधार पर चलती है। माता-पिता यदि बच्चों की देखभाल नहीं करते, उनकी शिक्षा की व्यवस्था नहीं होती है तो बच्चे सुविधाएं प्राप्त करने के लिए न्यायालय का दरवाजा खटखटा सकते हैं। वहाँ बच्चों को सुविधाएं मुहैया कराने की जिम्मेदारी माता-पिता की होती है। इस प्रकार का कानून बना हुआ है। लेकिन भारत में ऐसा नहीं है।

भारतीय परिवारों में सभी सदस्य अपनेपन के कारण एक दूसरे से जुड़े रहते हैं। भारतीय परिवार संविधान से नहीं, स्नेह सम्बन्धों से कर्तव्यबोध से चलते हैं। भारतीय परिवारों में सभी घटक स्वस्फूर्त अपने-अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं। कर्तव्य पालन के संस्कार इन्हें परिवार में अनायास ही मिलते रहते हैं, इसका कोई पृथक से प्रशिक्षण नहीं होता।

माता-पिता अपने कर्तव्य का निर्वहन करते हैं, बेटे-बेटियों को उनके अधिकार स्वतः सहज प्राप्त होते हैं। बेटे-बेटियों को अपने माता-पिता की सेवा करने में आनंद का, अहोभाग्य का अनुभव होता है। सेवा करना उन्हें सिखाया नहीं जाता, बल्कि वे अपने बड़ों से सीखते हैं। भारतीय परिवारों में अधिकारों की बात नहीं होती, यहाँ कर्तव्य और अधिकार साथ-साथ चलते हैं।

पश्चिम में फैमिली के लोग फैमिली तक सीमित रहते हैं। भारत में कुटुम्ब एक सामाजिक संस्था है जहाँ कुटुम्ब के साथ समाज की भी चिंता होती है।

कुटुम्ब को हमने परिवार कहा है क्योंकि कुटुम्ब केवल रक्त सम्बन्धी कुटुम्ब के भरोसे नहीं चलता। पिताजी कमाते होंगे, माताजी घर का काम करती होंगी, कभी-कभी माता-पिता दोनों नौकरी करते होंगे, लेकिन परिवार चलाने में नाई, धोबी, सुथार, सुनार, लुहार, सफाईकर्मी, स्वास्थ्यकर्मी सभी का योगदान रहता है। इतना ही नहीं घर के आंगन में तुलसी का पौधा, दरवाजे पर नीम का पेड़, आम का पेड़ इन सबका भी कुटुम्ब जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रहता है। बिल्ली, कुत्ता, गाय, तोता ये सभी कुटुम्ब जीवन का अंग बन कर रहते हैं। इन सबको मिलाकर परिवार बनता है।

कुटुम्ब के परिसर में कुटुम्ब पर निर्भर रहने वाले लोग वे भी अपने हैं, अपने परिवार के ही घटक हैं, भले ही उन सभी के साथ रक्त के सम्बन्ध नहीं होंगे। कुटुम्ब में रक्त सम्बन्ध होना यह एक भाग है, वास्तविक कुटुम्ब वह है जो अपनेपन से जोड़ता है जहाँ परिवार के सभी घटक आत्मीयता के धागे में माला के मोतियों की तरह गुथे रहते हैं।

भारतीय परिवारों में जिम्मेदारियाँ तय होती हैं, दायित्व दिये जाते हैं। अधिकार मांगने नहीं पड़ते हैं वे अपने आप ही मिल जाते हैं। परिवार केवल माता-पिता, पुत्र-पुत्री का जमघट नहीं है। एक छत के नीचे रहने वाले कुछ लोगों का कुनबा भी नहीं है। परिवार अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एकत्रित लोगों का समूह भी नहीं है। परिवार तो आत्मीयता के रिश्तों में सना-पगा ऐसा संस्कारित

कुल है जो इन रिश्तों को समाज, राष्ट्र से होते हुए वसुधैव कुटुंबकम् तक विस्तारित कर लेता है...।

कारगिल युद्ध के पश्चात् एक बार लालकृष्ण आडवाणी जी राजस्थान के एक परिवार से मिलने गये थे। उस परिवार का बेटा कारगिल के युद्ध में शहीद हुआ था। आडवाणी जी ने शहीद बेटे की माँ को ढाढस बंधाया एवं शहीद की चिता पर श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

घर से निकलते समय मां ने कहा, आडवाणी जी! बेटे के जाने के बाद मुझे एक कमी हमेशा खलती है। हमारे घर में सभी लोग सेना में हैं, ये मेरा आखिरी बेटा था, वह शहीद हो गया अब, सेना में भेजने के लिए कोई बेटा नहीं है। बस, यही कमी जरूर खलती है। इतना कहते हुए माँ की आँखें डबडबा गई थीं।

हमारा कुटुम्ब स्वार्थों से बंधा हुआ नहीं है, वह निःस्वार्थभाव से जुड़ा होता है, इसी निःस्वार्थता से परमार्थ के रिश्ते विकसित होते हैं। परमार्थ के ये रिश्ते जितने घनीभूत होते जाते हैं, उतने परिमाण में वह परिवार मानवता का पुजारी बनता जाता है, राष्ट्रभक्त परिवार बनता है।

हमारा देश धन-धान्य से परिपूर्ण रहा है। 'सुजलाम् सुफलाम्-मलयज-शीतलाम्-शस्य-श्यामलम् मातरम्'। ऐसी अपनी मातृभूमि है।

विदेशी पर्यटक मार्कोपोलो जब भारत भ्रमण पर आये थे। उन्होंने लिखा- "मैंने यहाँ घूमते हुए किसी दरिद्र व्यक्ति को नहीं देखा, यहाँ गरीबी नहीं है। मुझे कोई चोर भी नहीं मिला, यहाँ घर के लोग ताला लगाये बिना यात्रा पर चले जाते हैं। भारत में खुशहाली है, समृद्धि बहुत अधिक है।"

लेकिन इस देश में प्रतिष्ठा कमाने वालों की नहीं बांटने वालों की रही है। प्रतिष्ठा उन्हें खूब मिली, जो अपना सब कुछ वतन पर न्योछावर करते रहे। आज भी हमारे देश में धनिकों-धनाढ्यों की लम्बी फेहरिस्त है। उनके नाम देश को केवल संचार माध्यमों से ही पता चल पाते हैं।

परन्तु भामाशाह जैसे सामान्य सेठ को पूरा देश बड़े आदर के साथ आज भी याद करता है। भामाशाह ने अपने जीवन में परिश्रम से अर्जित की गई कौड़ी-कौड़ी को राणा के चरणों में समर्पित कर दिया और देने का तनिक अहंकार भी नहीं रखा।

इस देश में कमाने वालों का टोटा कभी नहीं रहा, लेकिन पूजा उन्हीं की होती है जो देश, धर्म के लिए अपना सर्वस्व दाँव पर लगाते हैं। ऐसी विभूतियों के लिए ये पंक्तियाँ सार्थक हैं-

प्रेरणा शहीदों से यदि हम नहीं लेंगे,
तो स्वतंत्रता ढलती हुई सांझ हो जायेगी।
पूजा वीरों की यदि हम नहीं करेंगे,
तो सच मानो वसुंधरा बाँझ हो जायेगी।।

भारत की परंपरा रही है कि यहाँ बड़ी बड़ी उपाधियों, अलंकरणों से कोई बड़ा नहीं बनता। अपने जीवन में सफलता के कीर्तिमान खड़ा करने वाले तो बहुतेरे होते हैं, लेकिन "झोपड़ी से उठने वाले आर्तनाद को अनुभव कर अपना सर्वस्व अर्पण करने वाले निरंहकारी दानवीर तो बिरले होते हैं।"

हमारे देश में 'रहीम' बड़े दानवीर हुए हैं। वे जब दान के लिए हाथ आगे बढ़ाते थे तो अपनी नजरें नीचे झुका लेते थे।

यह बात जब कबीरदास जी को पता चली तो उन्होंने कवि रहीम को चार पंक्तियाँ लिखकर भेजीं -

ऐसी देनी देन जु, कित सीखो हो सेन। ज्यों-ज्यों कर ऊँचौ करौ, त्यों-त्यों नीचे नैन।।

रहीम ने इसका जो प्रत्युत्तर दिया, उसे जिसने भी सुना वह रहीमदास का भक्त हो गया -

देनहार कोई और है,
देवत है दिन रैन।
लोग भरम हम पर करें,
याते नीचे नैन।।

सच में यदि मनुष्य का यह अहंकार मिट जाए तो वह जीवन को और श्रेष्ठता से जी सकता है। दान की हमारी श्रेष्ठ पराकाष्ठा रही है। हमारे यहाँ सौ हाथों से कमाते हैं, और हजार हाथों से बांटते हैंण्। समाज का यही अनुपम आदर्श भारतीय परिवारों का वैशिष्ट्य रहा है। बड़ों के आचरण, कुल परंपरा, रीति-रिवाज से परिवार में सामाजिकता का गुण विकसित होता है। समाज, राष्ट्र, प्रकृति से अलग मेरा कोई अस्तित्व नहीं है। चल, अचल, पैतृक, स्वार्जित सम्पत्ति यह सब कुछ केवल मेरा नहीं है, इस पर समाज का अधिकार है। मैं उसका ट्रस्टी हूँ यही भाव विकसित होता है।

पश्चिम में 'चैरिटी' शब्द आने के सदियों पहले ही हमारे यहाँ दानवीरों की कहानियाँ दादी- नानी बच्चों को प्रतिदिन सुनाया करती थीं। "स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः" अपने धर्म में मर जाना श्रेयस्कर है, लेकिन दूसरा धर्म स्वीकार नहीं है। शत् श्रीअकाल के जयघोष के साथ गुरू गोविंद सिंह के साहेबजादे फतेहसिंह और जोरावर सिंह की शहादत (जीवित दीवार में चुन दिए गए) की कहानी भी हम सभी ने अपने परिवारों में जरूर सुनी होगी। अपने प्राणों की बाजी लगाकर सब कुछ देश धर्म की रक्षार्थ

अर्पण कर देने वालों की परंपरा भारतीय परिवारों में बहुत पुरानी है।

पुराणों में राजा रंतिदेव की कथा का वर्णन मिलता है। एक बार राजा के राज्य में भीषण अकाल पड़ा था। प्रजा भूख से मर रही थी, राजा ने अपनी सारी सम्पत्ति प्रजा में बाँट दी। राजा-रानी दोनों राजकुमार, राजकुमारी कई दिनों की भूख के बाद भोजन के लिए बैठे थे, तभी एक भिक्षुक सामने आकर खड़ा हो गया और बोला- राजन! कई दिनों से कुछ खाने को नहीं मिला, बहुत भूख लगी है। राजा ने अपना भोजन का थाल भिक्षुक को दे दिया। उसके बाद रानी, राजकुमार, राजकुमारी ने भी अपने भोजन का थाल भिक्षुक को दे दिया। भोजन करने के बाद भिक्षुक तृप्त हो गया और फिर बोला राजन! पानी तो पिलाया ही नहीं, राजा ने पानी के चारों गिलास भिक्षुक को दे दिए तब भी भिक्षुक सामने खड़ा था। यह देखकर राजा की आँखों में आँसू आ गए।

राजा की आँखों में आंसू देखकर उन्होंने कहा, मुझे आपको कष्ट देने का कोई इरादा नहीं था, अपितु अत्यधिक भूख के कारण आपसे भोजन की प्रार्थना की थी। राजा रंतिदेव ने कहा मेरी आँखों में भूख के आँसू नहीं हैं, मेरे पास तुम्हें देने के लिए और कुछ नहीं है इसलिए मेरी आँखों में आँसू आ गये।

वस्तुत: वह भिक्षुक वेश में साक्षात धर्मराज थे। उन्होंने कहा राजन! कोई वरदान मांगो।

राजा रंतिदेव द्वारा उत्तर में कहा गया श्लोक बहुत प्रसिद्ध है-

न त्वहं कामये राज्यं,
न स्वर्गम् न पुनर्भवम्।
कामये दु:खतप्तानां,
प्राणिनां आर्तनाशनम्।।

भावार्थ- मुझे न राज्य की कामना है, न ही मुझे स्वर्ग की कामना है, मुझे मोक्ष भी नहीं चाहिए। मैं दु:खों से पीड़ित प्राणियों के कष्टों को दूर कर सकूँ, बस यही कामना है।

हमारे परिवारों में परोपकार के ऐसे संस्कार दिये जाने चाहिए।

भारतीय परिवारों में एक परंपरा है कि द्वार से किसी को खाली हाथ नहीं लौटाना, उसे कुछ न कुछ देना। घर के लोग याचक की झोली में अन्नदान के लिए छोटे बच्चे को भेजते हैं, अब यह कहीं लिखा नहीं है, लेकिन यह रिवाज, परंपरा सम्पूर्ण देश में सर्वत्र मिलती है।

बच्चों को ज्ञात रहता है कि घर में जो अन्न का भण्डार है, यह केवल मेरे या मेरे परिवार के लिए नहीं है, सम्पूर्ण समाज का उस पर अधिकार है। प्रतिदिन संध्या आरती में "तेरा तुझको अर्पण क्या लागे मेरा" गाते- गाते बच्चों का जीवन बदल जाता है। परिवार में 'नर सेवा नारायण सेवा' का भावार्थ सिखाना नहीं पड़ता।

भारतीय परिवारों में भोजन के बाद गाय को रोटी खिलाते थे, कीटों, चींटियों को दाना डालते थे, कुत्ते को रोटी देते थे, कौवे को भी खिलाते थे। घर के मुखिया को भूखे को भोजन कराए बिना भोजन की अनुमति नहीं होती थी। पशु-पक्षियों की चिंता, गाय की चिंता, पालतू जानवरों की चिंता परिवारों में सहज ही होती थी। आज इसमें न्यूनता आने से पर्यावरण में ईकोसिस्टम ही समाप्ती के कगार पर है।

पर्यावरण से अपना पारिवारिक नाता है। इसलिए पर्यावरण से लेना नहीं बल्कि पर्यावरण को देते रहने का भाव, उसकी सुरक्षा का भाव भारतीय परिवारों में आज भी देखने को मिलता है। प्रकृति का अमर्यादित उपभोग के स्थान पर उसका मर्यादित दोहन चाहिए। इस भाव को अधिक दृढ़ करने की आवश्यकता है। पर्यावरण सुरक्षित रहेगा, पर्यावरण बचेगा तो देश बचेगा।

परिवार में यह भाव जगाने की जरुरत है।

भारतीय परिवारों में शरीर अलग-अलग होते हैं लेकिन प्राण, तत्व एक है। सभी परिवार इसी 'एकांगी भाव' से जुड़े होते हैं। स्वार्थ से नि:स्वार्थ तथा नि:स्वार्थ से परमार्थ की यह यात्रा भारतीय परिवारों को पश्चिम की फैमिली से अलग करती है।

माता-पिता घर इसलिए नहीं बनाते हैं कि उन्हें उसमें रहना है, अपितु वे घर इसलिए बनाते हैं ताकि आने वाली संतानें सुखपूर्वक रह सकें। किसान फलदार वृक्ष लगाता है, उसे मालूम है कि 5-10 वर्ष बाद वृक्ष में फल आयेंगे। आने वाली पीढ़ियों को, समाज को, फल, फूल, खाद्यान मिलता रहे, इसलिए वह वृक्ष लगाता है। किसान सम्पूर्ण समाज के कल्याण के लिए जीवनभर परिश्रम करता है।

जब यह कुटुम्ब परंपरा टूटती है तो भाई-भाई में महाभारत जैसे युद्ध होते हैं, परिणामस्वरूप हस्तिनापुर को हारना पड़ता है। और जब कुटुम्ब भाव फलता- फूलता है तब हम पाँच और सौ नहीं बल्कि "वयं पंचाधिकम् शतम्" हम एक सौ पाँच हैं, का भाव जाग्रत होता है। तब विराट शत्रु कितना ही बलशाली क्यों न हो, उस पर विजय प्राप्त होने में कोई संदेह नहीं रहता।

आज भारत में पश्चिम के भोगवाद से बाहर आकर सदियों से चलती आई कुटुम्ब परंपरा को मजबूत करने की आवश्यकता है। ❐

संस्कृति एवं सेवा का संगम है वडतालधाम

■ प्रतिनिधि

आज पूरा विश्व श्री स्वामिनारायण संप्रदाय से परिचित है। इसका सबसे बड़ा केंद्र है वडतालधाम, जो गुजरात के खेड़ा जिले में स्थित है। वडतालधाम अध्यात्म के साथ-साथ सेवा का भी केंद्र बन गया है। वडतालधाम में श्री स्वामिनारायण अस्पताल है। इस अस्पताल में 'कैश काउन्टर' ही नहीं है। यानी यहाँ आने वाले रोगियों से किसी प्रकार का कोई शुल्क नहीं लिया जाता। मरीजों को रहने, खाने और अन्य चिकित्सा सुविधाएँ नि:शुल्क दी जाती हैं। यही नहीं, मरीजों के साथ आने वाले लोगों के लिए भी आवास, भोजन की व्यवस्था मंदिर ही करता है।

मंदिर परिसर में विशाल अन्नक्षेत्र है। यहाँ प्रतिदिन 10 हजार से अधिक भक्त भोजनरूप में प्रसाद प्राप्त करते हैं। मंदिर द्वारा एक गोशाला का संचालन किया जाता है, जिसमें भारतीय नस्ल की गायें हैं। अन्नक्षेत्र के लिए दूध, दही, छाछ, मक्खन, घी सब कुछ इसी गोशाला से मिलता है। यहाँ साधु, संन्यासी एवं ब्रह्म कुमारों के लिए संस्कृत के साथ-साथ योग, कंप्यूटर, संगीत का अध्ययन नि:शुल्क उपलब्ध है। इनके वस्त्र, आवास, भोजन का भार भी मंदिर ट्रस्ट वहन करता है। वडतालधाम मंदिर में शताब्दियों से ग्रंथालय है, जो जिज्ञासुओं की ज्ञानपिपासा तृप्त करता है।

इन दिनों वडतालधाम का द्विशताब्दी समारोह चल रहा है। इस अवसर पर 200 विप्र बटुकों का सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार, 200 निर्धन गरीब वर-वधुओं का सामूहिक विवाह हुआ है। 51,000 पौधे लगाए गए हैं। गरीब लोगों के बीच कंबल और चप्पलों का वितरण किया गया है। मणिपुर में हिंसा से प्रभावित 100 हिंदू बच्चों को गोद लेकर उन्हें शिक्षा दे रहा है।

वडतालधाम की स्थापना स्वयं श्री स्वामिनारायण भगवान ने की थी। बता दें कि श्री स्वामिनारायण भगवान का प्राकट्य अयोध्या के समीपवर्ती गाँव छपिया में संवत् 1837 में चैत्र शुक्ल नवमी के दिन हुआ था। केवल 11 वर्ष की आयु में उन्होंने गृहत्याग करके 7 वर्ष तक तीर्थाटन किया। अंत में वे गुजरात पहुँचे और फिर कभी लौटकर अयोध्या नहीं आए। उन्होंने रामानंद स्वामीजी से दीक्षा प्राप्त करके सहजानंद स्वामी नाम धारण किया। उन्होंने अपने मत का प्रचार करने के लिए 'स्वामिनारायण मंत्र' का सहारा लिया। इस मंत्र से वे भक्तों को दिव्यता, आनंद, शांति... की अनुभूति कराने लगे। मंत्र का ऐसा प्रभाव हुआ कि भक्त उन्हें स्वामिनारायण भगवान कहने लगे।

स्वामिनारायण भगवान ने अपने कार्यकाल में ही अमदाबाद, गड़रा, भुज, धोलेरा और वडतालधाम में मंदिर बनवाए। वडतालधाम में स्वामिनारायण भगवान ने ही लक्ष्मीनारायण देव की प्रतिष्ठा की है। उन्होंने सर्वत्र अपनी करुणा का परिचय दिया। उनसे प्रभावित होकर शीघ्र ही 2,000 से अधिक युवा संन्यासी बने। इन संन्यासियों एवं आदर्श भक्त समाज के माध्यम से व्यसनमुक्त वृहद् समाज का निर्माण किया। जहाँ-जहाँ विचरण किया, वहाँ के अंधश्रद्धा मूलक प्रश्नों का निराकरण किया। आर्थिक सहायता प्रदान की। जीवन का पथप्रदर्शन किया। उत्सवों के माध्यम से मानव को रसाप्लावित किया। इन्हीं कारणों से केवल 25 साल में उन्होंने समग्र गुजरात को अपना बना लिया। भगवान स्वामिनारायण ने अपने जीवन में धर्म एवं संस्कृति के साथ-साथ चित्र, संगीत, साहित्य का भी परिपोषण किया। वडतालधाम में मध्यखंड में श्रीलक्ष्मीनारायण देव विराजमान हैं। दक्षिण खंड में वासुदेवनारायण एवं धर्मभक्ति की प्रतिमा है। उत्तर खंड में श्री राधाकृष्ण विराजमान हैं। पास में श्री स्वामिनारायण भगवान 'हरिकृष्ण महाराज' के नाम से विराजित हैं। ❐

ऑटो लेकर निकल पड़ा मोहन

"बेटा! थोड़ा खाना खाकर जा...!! दो दिन से तूने कुछ खाया नहीं है।'' लाचार माता के शब्द हैं, अपने बेटे को समझाने के लिए। "देख मम्मी! मैंने मेरी बारहवीं बोर्ड की परीक्षा के बाद वेकेशन में सेकेंड हैंड बाइक मांगी थी, और पापा ने प्रॉमिस किया था। आज मेरे आखिरी पेपर के बाद दीदी को कह देना कि जैसे ही मैं परीक्षा खंड से बाहर आऊंगा तब पैसा लेकर बाहर खड़ी रहे। मेरे दोस्त की पुरानी बाइक आज ही मुझे लेनी है और हाँ, यदि दीदी वहाँ पैसे लेकर नहीं आयी तो मैं घर वापस नहीं आऊंगा।''

एक गरीब घर में बेटे मोहन की जिद् और माता की लाचारी आमने-सामने टकरा रही थी।

"बेटा! तेरे पापा तुझे बाइक लेकर देने ही वाले थे, लेकिन पिछले महीने हुए एक्सिडेंट...''

मम्मी कुछ बोले उसके पहले मोहन बोला, "मैं कुछ नहीं जानता... मुझे तो बाइक चाहिए ही चाहिए...!!''

ऐसा बोलकर मोहन अपनी मम्मी को गरीबी एवं लाचारी की मझधार में छोड़ कर घर से बाहर निकल गया।

12वीं बोर्ड की परीक्षा के बाद भागवत 'सर' एक अनोखी परीक्षा का आयोजन करते थे।

हालांकि भागवत सर का विषय गणित था, किन्तु विद्यार्थियों को जीवन का भी गणित भी समझाते थे और उनके सभी विद्यार्थी विविधता से भरे ये परीक्षा अवश्य देने जाते थे।

इस साल परीक्षा का विषय था- मेरी पारिवारिक भूमिका। मोहन परीक्षा खंड में आकर बैठ गया।

उसने मन में गांठ बांध ली थी कि यदि मुझे बाइक लेकर नहीं देंगे तो मैं घर नहीं जाऊंगा।

भागवत सर की क्लास में सभी को पेपर वितरित हो गया। पेपर में 10 प्रश्न थे। उत्तर देने के लिये एक घंटे का समय दिया गया था।

मोहन ने पहला प्रश्न पढ़ा और जवाब लिखने की शुरुआत की।

प्रश्न एक :- आपके घर में आपके पिताजी, माताजी, बहन, भाई और आप कितने घंटे काम करते हैं? सविस्तार बताएं।

मोहन ने जल्द से जवाब लिखना शुरू कर दिया। पापा सुबह छह बजे टिफिन के साथ अपनी ऑटो रिक्शा लेकर निकल जाते हैं। और रात को नौ बजे वापस आते हैं। कभी कभार वर्दी में जाना पड़ता है। ऐसे में लगभग पंद्रह घंटे। मम्मी सुबह चार बजे उठकर पापा का टिफिन तैयार कर, बाद में घर का सारा काम करती हैं। दोपहर को सिलाई का काम करती हैं। और सभी लोगों के सो जाने के बाद वह सोती हैं। लगभग रोज के सोलह घंटे। दीदी सुबह कॉलेज जाती हैं, शाम को 4 से 8 पार्ट टाइम जॉब करती हैं और रात्रि को मम्मी को काम में मदद करती हैं। लगभग बारह से तेरह घंटे। मैं, सुबह छह बजे उठता हूँ, और दोपहर स्कूल से आकर खाना खाकर सो जाता हूँ। शाम को अपने दोस्तों के साथ टहलता हूँ। रात्रि को ग्यारह बजे तक पढ़ता हूँ। लगभग दस घंटे। (इससे मोहन को मन

ही मन लगा कि उनका कामकाज में औसत सबसे कम है।)

प्रश्न दो :- आपके घर की मासिक कुल आमदनी कितनी है?

पापा की आमदनी लगभग दस हजार है। मम्मी एवं दीदी मिलकर पांच हजार जोड़ती हैं। कुल आमदनी पंद्रह हजार।

प्रश्न तीन :- मोबाइल रिचार्ज प्लान, आपकी मनपसंद टीवी पर आ रही तीन सीरियल के नाम, शहर के एक सिनेमा हॉल का पता और अभी वहां चल रही मूवी का नाम बताएं।

सभी प्रश्नों के जवाब आसान होने से फटाफट दो मिनट में लिख दिए।

प्रश्न चार :- एक किलो आलू और भिंडी के अभी हाल की कीमत क्या है? एक किलो गेहूं, चावल और तेल की कीमत बताएं और जहाँ पर घर का गेहूं पिसाने जाते हो, उस आटा चक्की का पता दीजिए।

मोहन भाई को इस सवाल का जवाब नहीं आया। उसे समझ में आया कि हमारी दैनिक आवश्यक जरूरतों की चीजों के बारे में तो उसे लेशमात्र भी ज्ञान नहीं है। मम्मी जब भी कोई काम बताती थी तो मना कर देता था। आज उसे ज्ञान हुआ कि अनावश्यक चीजें मोबाइल रिचार्ज, मुवी का ज्ञान इतना उपयोगी नहीं है। अपने घर के काम की जवाबदेही लेने से या तो हाथ बटोर कर साथ देने से हम कतराते रहे हैं।

प्रश्न पाँच :- आप अपने घर में भोजन को लेकर कभी तकरार या गुस्सा करते हो?

हां, मुझे आलू के सिवा कोई भी सब्जी पसंद नहीं है। यदि मम्मी और कोई सब्जी बनायें तो, मेरे घर में झगड़ा होता है। कभी मैं बगैर खाना खाए उठ खडा हो जाता हूँ। (इतना लिखते ही मोहन को याद आया कि आलू की सब्जी से मम्मी को गैस की तकलीफ होती हैं। पेट में दर्द होता है, अपनी सब्जी में एक बड़ी चम्मच वो अजवाइन डालकर खाती हैं। एक दिन मैंने गलती से मम्मी की सब्जी खा ली, और फिर मैंने थूक दिया था। और फिर पूछा कि मम्मी तुम ऐसा क्यों खाती हो? तब दीदी ने बताया था कि हमारे घर की स्थिति ऐसी अच्छी नहीं है कि हम दो सब्जी बनाकर खायें। तुम्हारी जिद के कारण मम्मी बेचारी क्या करें?)

प्रश्न छह :- आपने अपने घर में की हुई आखिरी जिद के बारे में लिखिए।

मोहन ने जवाब लिखना शुरू किया। मेरी बोर्ड की परीक्षा पूर्ण होने के बाद दूसरे ही दिन बाइक के लिये जिद की थी। पापा ने कोई जवाब नहीं दिया था, मम्मी ने समझाया कि घर में पैसे नहीं हैं, लेकिन मैं नहीं माना! मैंने दो दिन से घर में खाना खाना भी छोड़ दिया है। जबतक बाइक नहीं लेकर दोगे मैं खाना नहीं खाऊंगा। और आज तो मैं वापस घर नहीं जाऊंगा कहकर निकला हूँ। अपनी जिद का प्रामाणिकता से मोहन ने जवाब लिखा।

प्रश्न सात :- आपको अपने घर से मिल रही पॉकेट मनी का आप क्या करते हो? आपके भाई-बहन कैसे खर्च करते हैं?

हर महीने पापा मुझे सौ रुपये देते हैं। उसमें से मैं, मनपसंद परफ्यूम, गोगल्स लेता हूं, या अपने दोस्तों की छोटी-मोटी पार्टियों में खर्च करता हूँ। मेरी दीदी को भी पापा सौ रुपये देते हैं। वो खुद कमाती हैं और पगार के पैसे से मम्मी को आर्थिक मदद करती हैं।

प्रश्न आठ :- आप अपनी खुद की पारिवारिक भूमिका को समझते हो?

प्रश्न अटपटा और जटिल होने के बाद भी मोहन ने जवाब लिखा। परिवार के साथ जुड़े रहना, एक-दूसरे के प्रति समझदारी से व्यवहार करना एवं मददरूप होना चाहिए और ऐसे अपनी जवाबदेही निभानी चाहिए। यह लिखते लिखते ही अंतरात्मा से आवाज आयी कि अरे मोहन! तुम खुद अपनी पारिवारिक भूमिका को योग्य रूप से निभा रहे हो? और अंतरात्मा से जवाब आया कि ना बिल्कुल नहीं...!!

प्रश्न नौ :- आपके परिणाम से आपके माता-पिता खुश हैं? क्या वह अच्छे परिणाम के लिए आपसे जिद करते हैं? आपको डांटते रहते हैं?

(इस प्रश्न का जवाब लिखने से पहले हुए मोहन की आंखें भर आई। अब वह परिवार के प्रति अपनी भूमिका बराबर समझ चुका था।)

लिखने की शुरुआत की ण्ण वैसे तो मैं कभी भी मेरे माता-पिता को आजतक संतोषजनक परिणाम नहीं दे पाया हूँ। लेकिन इसके लिए उन्होंने कभी भी जिद नहीं की है। मैंने बहुत बार अच्छे रिजल्ट के प्रॉमिस तोड़े हैं। फिर भी हल्की सी डांट के बाद वही प्रेम और वात्सल्य बना रहता था।

प्रश्न दस :- पारिवारिक जीवन में असरकारक भूमिका निभाने के लिए इस वेकेशन में आप कैसे परिवार को मदद रूप होंगे!

जवाब में मोहन की कलम चले इससे पहले उसकी आंखों से आंसू बहने लगे, और जवाब लिखने से पहले

ही कलम रुक गई ण्ण बेंच के नीचे मुंह रखकर रोने लगा। फिर से कलम उठायी तब भी वो कुछ भी न लिख पाया। अनुत्तर दसवां प्रश्न छोड़कर पेपर सबमिट कर दिया।

स्कूल के दरवाजे पर दीदी को देखकर उसकी ओर दौड़ पड़ा। "भैया! ये ले आठ हजार रुपये, मम्मी ने कहा है कि बाइक लेकर ही घर आना।''

दीदी ने मोहन के सामने पैसे धर दिए। "कहाँ से लायी ये पैसे?'' मोहन ने पूछा।

दीदी ने बताया, "मैंने अपने ऑफिस से एक महीने की सैलरी एडवांस मांग ली। मम्मी भी जहां काम करती हैं वहीं से उधार ले लिया, और अपनी पॉकेट मनी की बचत से निकाल लिए। ऐसा करके तुम्हारी बाइक के पैसे की व्यवस्था हो गई है। मोहन की दृष्टि पैसे पर स्थिर हो गई।

दीदी फिर बोली "भाई, तुम मम्मी को बोलकर निकले थे कि पैसे नहीं दोगी तो, मैं घर पर नहीं आऊंगा! अब तुम्हें समझना चाहिए कि तुम्हारी भी घर के प्रति जिम्मेदारी है। मुझे भी बहुत से शौक हैं, लेकिन अपने शौक से अपने परिवार को मैं सबसे ज्यादा महत्व देती हूं। तुम हमारे परिवार के सबसे लाडले हो, पापा को पैर की तकलीफ है, फिर भी तेरी बाइक के लिए पैसे कमाने और तुम्हें दिए प्रॉमिस को पूरा करने अपने फ्रैक्चर वाले पैर होने के बावजूद काम किये जा रहे हैं। तेरी बाइक के लिये। यदि तुम समझ सको तो अच्छा है, कल रात को अपने प्रॉमिस को पूरा नहीं कर सकने के कारण बहुत दु:खी थे। और इसके पीछे उनकी मजबूरी है।

बाकी तुमने तो अनेक बार अपने प्रॉमिस तोड़े ही है न?

मेरे हाथ में पैसे थमाकर दीदी घर की ओर चल निकली।

उसी समय उनका दोस्त वहां अपनी बाइक लेकर आ गया, अच्छे से चमका कर ले आया था।

"ले... मोहन आज से ये बाइक तुम्हारी, सब बारह हजार में मांग रहे हैं, मगर ये तुम्हारे लिए आठ हजार।''

मोहन बाइक की ओर टकर- टकर देख रहा था। और थोड़ी देर के बाद बोला, "दोस्त तुम अपनी बाइक उस बारह हजार वाले को ही दे देना! मेरे पास पैसे की व्यवस्था नहीं हो पायी है और होने की संभावना भी नहीं है।" और वो सीधा भागवत सर की केबिन में जा पहुंचा। "अरे मोहन! कैसा लिखा है पेपर में? भागवत सर ने मोहन की ओर देख कर पूछा।

"सर...!!, यह कोई पेपर नहीं था, ये तो मेरे जीवन के लिये दिशानिर्देश था। मैंने एक प्रश्न का जवाब छोड़ दिया है। किन्तु ये जवाब लिखकर नहीं अपने जीवन की जवाबदेही निभाकर दूंगा और भागवत सर को चरण स्पर्श कर अपने घर की ओर निकल पड़ा। घर पहुंचते ही, मम्मी पापा दीदी सब उसकी राह देखकर खड़े थे। "बेटा! बाइक कहाँ है?'' मम्मी ने पूछा। मोहन ने दीदी के हाथों में पैसे थमा दिए और कहा कि सोरी! मुझे बाइक नहीं चाहिए। और पापा मुझे ओटो की चाभी दो, आज से मैं पूरे वेकेशन तक ऑटो चलाऊंगा और आप थोड़े दिन आराम करेंगे, और मम्मी आज मैं मेरी पहली कमाई शुरू होगी। इसलिए तुम अपनी पसंद की मैथी की भाजी और बैगन ले आना, रात को हम सब साथ मिलकर के खाना खायेंगे।

मोहन के स्वभाव में आए परिवर्तन को देखकर मम्मी ने उसको गले लगा लिया और कहा कि "बेटा! सुबह जो कहकर तुम गए थे वो बात मैंने तुम्हारे पापा को बतायी थी, और इसलिए वो दु:खी हो गए, काम छोड़ कर वापस घर आ गए। भले ही मुझे पेट में दर्द होता हो लेकिन आज तो मैं तेरी पसंद की ही सब्जी बनाऊंगी।'' मोहन ने कहा, "नहीं मम्मी! अब मै समझ गया हूँ कि मेरे घर-परिवार में मेरी भूमिका क्या है? मैं रात को बैंगन मेथी की सब्जी ही खाऊंगा, परीक्षा में मैंने आखरी जवाब नहीं लिखा है, वह प्रेक्टिकल करके ही दिखाना है। और हाँ मम्मी हम गेहूं को पिसवाने कहां जाते हैं, उस आटा चक्की का नाम और पता भी मुझे दे दो'' और उसी समय भागवत सर ने घर में प्रवेश किया। और बोले "वाह! मोहन जो जवाब तुमने लिखकर नहीं दिये वे प्रेक्टिकल जीवन जीकर कर दोगे।''

"सर! आप और यहाँ?'' मोहन भागवत सर को देख कर आश्चर्यचकित हो गया। "मुझे मिलकर तुम चले गए, उसके बाद मैंने तुम्हारा पेपर पढ़ा इसलिए तुम्हारे घर की ओर निकल पड़ा। मैं बहुत देर से तुम्हारे अंदर आए परिवर्तन को सुन रहा था। मेरी अनोखी परीक्षा सफल रही और इस परीक्षा में तुमने पहला नंबर पाया है।''

ऐसा बोलकर भागवत सर ने मोहन के सर पर हाथ रखा।

मोहन ने तुरंत ही भागवत सर के पैर छुए और ऑटो रिक्शा चलाने के लिए निकल पड़ा...। ❐

(सोशल मीडिया से)

दीपावली महोत्सव

उत्तम जिले के सभी केंद्रों पर दीपावली महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। जिले के कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त विभाग कोषाध्यक्ष श्री राजीव बतरा जी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। सभी केन्द्रों पर सुन्दर कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। बच्चों को कुछ उपहार दिए गए और प्रसाद वितरण किया गया।

उत्तम नगर जिले का वार्षिकोत्सव

गत 26 अक्टूबर को उत्तम जिले का वार्षिकोत्सव एवं सम्मान समारोह विभाग अध्यक्ष श्री राजेन्द्र तिवारी जी की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। जिले और विभाग के सभी कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त निरीक्षिका रंजना शर्मा जी व सभी शिक्षिकाओं का उत्साह सराहनीय रहा। इस अवसर पर अपने प्रमुख दानदाताओं को सम्मानित किया गया। सेवा भारती का परिचय श्री राजेन्द्र तिवारी जी ने कराया। उद्‌बोधन प्रांत मंत्री श्री शैलेन्द्र विक्रम जी का रहा। उन्होंने सेवा भारती के कार्यों और समाज उत्थान में उसकी भूमिका का अत्यंत सजीव चित्रण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के अंत में भोजन प्रसाद की सुन्दर व्यवस्था रही। बच्चों ने वातावरण को राममय बना दिया।

गोवर्धन पूजा और विश्वकर्मा जयंती

गत 2 नवंबर को शिवानी केन्द्र उत्तम जिले में गोवर्धन पूजा/विश्वकर्मा जयंती धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर शिक्षिकाओं ने मशीनों की पूजा की। भजन मंडली की बहनों और सेवित जनों का मार्गदर्शन श्री राजीव बतरा जी ने किया। जिला अध्यक्ष श्री बृजलाल मग्गो जी भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। भजन कीर्तन के बाद प्रसाद वितरण किया गया।

दीपक का सन्देश

■ **गंगा प्रसाद 'सुमन'**

दीपक उजियारा करता अंधियारे में,
पथ प्रशस्त करता जाता अंधियारे में।
यह साहस का सम्बल बनता अंधियारे में,
पथ भटके को राह दिखाता अंधियारे में।।

दीपक बाती जलजल कर उजियारा करती
ऊर्ध्वगामी बनो सनतों की वाणी कहती।
मानव-जीवन भी दीपक लौं जलता रहता
पर-सेवा हित प्रेमामृत सदा भरता रहता।।

एक दीप से जलें अनेक चहुँ ओर उजाला करते,
दीपक लौं ज्ञानीजन भी अज्ञान अंधेरा हरते।
दीपक करता ऊर्ध्व प्रकाश अपना अस्तित्व बताता,
भूत भविष्य को कर विस्तृत वर्तमान बतलाता।।

दीपक जलता है पर स्वयं अंधेरे में है रहता,
वह पर-हित में करके प्रकाश मुस्काता रहता।
सन्देश रे रहा हमको दीपक-लौं स्वयं बनें,
दीपक-बाती बनकर विपदाओं से स्वयं लड़ें।। ❐

अनेक स्थानों पर आनंद की 'अनुभूति'

गत 29 अक्टूबर, दिन बुधवार को जनक जिले की गाड़िया लोहार बस्ती और पिलीकोठी में अनुभूति का कार्यक्रम रहा। भारती कॉलेज की एन एस एस की स्वयंसेविकाएं और स्थानीय स्वयंसेवकों द्वारा घर-घर जाकर दीपावली की शुभकामनायें दी गई। 30 अक्टूबर को भारती कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में घुमंतू समाज को ध्यान में रखकर अनुभूति का सुन्दर कार्यक्रम संपन्न हुआ। कॉलेज के सामने ही सिल्कीबंद समाज और देया समाज के लोग रहते हैं। प्रधानाचार्या महोदया के निर्देश पर "राष्ट्रीय सेवा योजना" की छात्राओं द्वारा 4 दिन पहले इन परिवार जनों से मिलना हुआ। छात्राओं द्वारा इन लोगों को पहले आमंत्रित किया गया। बस्ती के सभी लोग न केवल कॉलेज आए वरन सभी ने अंदर आकर सुन्दर अनुभव प्राप्त किया।

कार्यक्रम में सिल्कीबंद, देया, गाड़िया लोहार एवं पीलीकोठी के परिवार जनों ने सहभाग किया। प्राचार्या महोदया ने सभी को भोजन कराकर सम्मान के साथ विदाई की। 31अक्टूबर को इग्नू में अनुभूति कार्यक्रम के अंतर्गत रजिस्टर और डिप्टी रजिस्टर द्वारा सभी गार्डो और सफाई कर्मचारियों को तिलक लगाकर सेवा भारती का कैलेंडर और मिठाई का वितरण किया।

31 अक्टूबर को ही परेना समाज, नाहरगढ़ में अनुभूति का कार्यक्रम रहा। इस अवसर पर सेवा भारती दिल्ली प्रांत के अध्यक्ष श्री रमेश अग्रवाल, अपराजिता की अध्यक्षा श्रीमती कल्पना पोपली, जिला प्रचारक जी एवं सेवा प्रमुख की उपस्थिति रही। घूमन्तु समाज जिला संयोजक श्री अशोक जी सहित जिला नाहर गढ़ के कार्यकर्ता भी उपस्थित रहे। ❐

कलंदर कॉलोनी में दीपावली मिलन

सेवा भारती स्ट्रीट चिल्ड्रन प्रकल्प, कलंदर कॉलोनी, दिलशाद गार्डन में 29 अक्टूबर 2024 को दोपहर 01 बजे से दीपावली मंगल मिलन का कार्यक्रम विधिवत दीप प्रज्ज्वलन के साथ प्रारंभ हुआ। कार्यक्रम में केंद्र की कार्यकारिणी के सभी सदस्यों ने भाग लिया। मुख्य अतिथि के रूप में श्री मान्वेंद्र जी, संगठन मंत्री, यमुना विहार विभाग, का भी आगमन हुआ। केंद्र में अध्ययन करने वाले लगभग 160 बच्चों ने भी कार्यक्रम में भाग लिया। श्रीमान भूषण गुप्ता जी द्वारा केंद्र में पढ़ने वाले सभी बच्चों के लिए अल्पाहार के रूप में समोसे एवं पेय पदार्थ की व्यवस्था की गयी। केंद्र में कार्यरत सभी शिक्षक शिक्षिकाओं को दिवाली के शुभ अवसर पर उपहार स्वरूप मिठाई का गिफ्ट पैक, एक डबल बेड शीट, 500 रुपये की राशि, एक पैकेट मोमबत्ती, वितरित किया गया। इसके अतिरिक्त विद्युत लड़ीयाँ, मोमबत्ती, दीया और जूट का थैला आदि बनाने वाले बच्चों एवम शिक्षिकाओं को अतिरिक्त सहायता राशि प्रदान की गई। केंद्र की ओर से उपस्थित सभी लोगों को मिठाई खिलाकर दीपावली की शुभकामनाएँ दी गई। ❐

मातृछाया के एक बच्चे को मिला 'घर'

सेवा भारती, दिल्ली के अंतर्गत एक परियोजना मातृछाया, बेसहारा बच्चों की देखभाल और ऐसे बच्चों के लिए नए घर खोजने के माध्यम से मानवता की सेवा की दिशा में काम कर रही है, जिन्हें उनके जैविक माता-पिता ने छोड़ दिया है। मातृछाया अज्ञात स्रोतों से उनके पास आने वाले बच्चों की देखभाल करती है। कभी-कभी बच्चे पुलिस के माध्यम से मातृछाया में आते हैं, कभी-कभी मातृछाया के 'पालना' में छोड़ दिए जाते हैं। मातृछाया का प्रमुख कार्य बच्चों की देखभाल करना और उन्हें अपना नया घर खोजने में मदद करना है। नि:संतान दम्पति केंद्रीयकृत दत्तक ग्रहण संसाधन प्राधिकरण के साथ खुद को पंजीकृत करते हैं; और जब उनकी बारी आती है, और उन्हें उनके इच्छित गोद लेने के स्रोत के रूप में मातृछाया आवंटित की जाती है, तो वे मातृछाया से संपर्क करते हैं और मातृछाया उन्हें बच्चा गोद लेने में मदद करती है। 6 अक्टूबर 2024 को एक बच्चे को गोद लेने का ऐसा ही कार्यक्रम आयोजित किया गया। गर्वित माता-पिता अपने परिवार के सदस्यों के साथ बड़े पैमाने पर उपस्थित गोद लेने के समारोह में शामिल हुए, जिसमें कई प्रमुख लोग शामिल हुए। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री अनिल शर्मा एसएचओ, पश्चिम विहार (पश्चिम) थे, उनके साथ उनकी पत्नी श्रीमती रेणुका जी, श्री राकेश बंधु जी एक प्रख्यात समाजसेवी, मातृछाया की प्रबंधन टीम डॉ दीपक सिंघला, महाराजा अग्रसेन अस्पताल के निदेशक, श्री सुरेश जी (सूर्य साड़ी), श्री राजीव सपरा जी (जिला संघ चालक), डॉ. राम कुमार जी (राष्ट्रीय सेवा भारती) एवं डॉ संजय जिंदल उपस्थित थे। मातृछाया टीम के अन्य कार्यकर्ताओं ने कार्यक्रम के लिए विस्तृत व्यवस्था की थी। मातृछाया घर को रंग-बिरंगे गुब्बारों से सजाया गया था। मुख्य अतिथि और समारोह में उपस्थित सभी अतिथियों के लिए बैठने की उचित व्यवस्था की गई थी। गोद दिये जाने वाले बच्चे को यशोदा समूह द्वारा बग्गी में लाया गया जिसको गुब्बारों और रंगीन रिबन से सजाया गया था। एक विशेष गीत बजाया गया। पूरा हॉल भावनामय हो गया था। मातृछाया के नियमों के अनुसार श्रीमती जया ने सरस्वती वंदना गाई, सभी यशोदाओं ने भजन गाए, बच्चों ने नृत्य किया, दो बच्चों ने गायत्री मंत्र का पाठ किया। तत्पश्चात् श्री योगेश जी ने मातृछाया के बारे में बताया। सभी सम्मानित अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन का कार्यक्रम किया गया। अंत में बच्चे को उसके माता-पिता को सौंप दिया गया। हम सभी के लिए यह एक यादगार पल था। कार्यक्रम के बाद स्वादिष्ट भोजन का आयोजन किया गया। अंत में प्रत्येक सदस्य ने परिवार को विदाई दी। 2002 के बाद से यह 360वाँ दत्तक ग्रहण कार्यक्रम था। इस प्रकार मातृछाया द्वारा एक और मील का पत्थर पार किया गया। ❐

बस्तियों में बांटे गए खिल-बतासे

गत 28 अक्टूबर को शाहदरा जिला सेवा भारती के कार्यकर्ताओं और शिक्षिकाओं ने अनुभूति के कार्यक्रम के अंतर्गत कड़कड़डूमा गांव, हेडगेवार हॉस्पिटल के पास वाली बस्ती और आनंद विहार जेजे कैंप बस्ती और शांति मुकुंद हॉस्पिटल के पीछे सेवा बस्ती में रहने वाले परिवारों को आरती की पुस्तिका, दीपक और बतासे दिए। इसके साथ ही उन लोगों ने वहां के निवासियों को दीपावली की शुभकामनाएं दीं। इससे स्थानीय लोग बड़े खुश हुए।

शिक्षिका निरीक्षिका सम्मान समारोह

गत 27 अक्टूबर को पूर्वी विभाग में दीपावली मिलन व शिक्षिका निरीक्षिका सम्मान समारोह आयोजित हुआ। इसमें चारों जिलों की भागीदारी रही। शाहदरा व गांधी नगर व इन्द्रप्रस्थ व मयूर विहार जिला की सभी शिक्षिकाएं व निरीक्षिकाएं व विभाग के कार्यकर्ता व महिला समिति की बहनों व चारों जिलों के सभी कार्यकर्ताओं की उपस्थिति रही। शिक्षिका व निरीक्षिका सम्मान में एक सूट व एक मिठाई का डिब्बा दिया गया। अन्त में कल्याण मंत्र व भोजन मंत्र हुआ उसके बाद सभी ने भोजन किया।

कैलाश नगर में दीपावली मिलन

गत दिनों गांधीनगर जिले के डॉ हेडगावर भवन, कैलाश नगर में 'टीन फॉर सेवा' के बच्चों द्वारा दीपावली मिलन कार्यक्रम आयोजित हुआ। इसमें सेवित जनों में उपहार वितरण तथा निर्धन परिवारों में राशन किट का वितरण कॉलेज के विद्यार्थियों द्वारा किया गया। विद्यार्थियों की संख्या 25 रही। सेविन जनों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया। प्रांत से उपाध्यक्ष श्री डी. पी. यादव जी, मंत्री निधि आहूजा जी, 'टीन फॉर सेवा' की सह संयोजिका नीतू शर्मा जी, विभाग से विभाग अध्यक्ष विनोद बंसल जी, सहमंत्री पवन जी, जिले से मंत्री पंकज जी, सहमंत्री विनीत जी, कोष प्रमुख परमेश्वर जी, महिला समिति की सविता जी, शील ढींगरा जी और निरीक्षिका शिक्षिका उपस्थित रहीं। कार्यक्रम में सेवित जनों के परिवार भी उपस्थित रहे और इस तरह के प्रयास के लिए जिले की सराहना की।

भीष्म सेवा केन्द्र का वार्षिकोत्सव

गत 11 अक्तूबर को सेवा भारती मंडोली नगर, जिला नंद नगरी, यमुना विहार विभाग में संचालित भीष्म सेवा केन्द्र की प्रमुख श्रीमती भारती सिंह ने समिति की बैठक में केन्द्र के वार्षिकोत्सव को प्रतिवर्ष महीपाल जी की धर्मशाला में नवदुर्गा नवमी के पावन अवसर पर आयोजित करने का प्रस्ताव रखा, जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया। इस बार सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ-साथ रामलीला का भी मंचन किया गया। 4 दिन के अल्प समय में श्रीमती ललिता सिंह जी की कड़ी मेहनत से बालक-बालिकाओं को रामलीला मंचन के लिए तैयार किया गया। केन्द्र के बालक तथा भगत सिंह विद्यार्थी शाखा के स्वयंसेवकों ने मिलकर गली को स्वच्छ किया। समाज के सहयोग से 10 टेबल का मंच बनाया गया। विभाग मंत्री गवेंद्र जी ने सेवा भारती की प्रदर्शनी उपलब्ध कराई, जिसको केन्द्र की शिक्षिका प्रीति सिंह जी ने बच्चों के सहयोग से लगवाया। माइक सिस्टम अपने सेवा भारती के दानदाता श्री नरेन्द्र शर्मा जी के सुपुत्र आकाश शर्मा के सहयोग से उनकी हनुमान चालीसा की मंदिर टीम ने किया। प्रसाद की व्यवस्था श्री सूरज सिंह द्वारा की गई। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री मनोरंजन जी गोस्वामी अपने परिवार सहित आए। कार्यक्रम की शुरुआत श्री राम प्रकाश जी गोस्वामी जिला अध्यक्ष रोहतास नगर, विभाग संगठन मंत्री मानवेंद्र जी, विभाग मंत्री गवेन्द्र जी व कलाकार बालकों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया।

रामलीला का मंचन व सांस्कृतिक कार्यक्रम में 54 बाल- बालिकाओं ने भाग लिया। बस्ती से अभिभावक समाज के बंधु-बहन सभी ने कार्यक्रम में ताली बजाकर आनंद लिया।

केन्द्र पर पढ़ने वाले एक बालक रोहन कुमार (केशव) ने इस बार नीट परीक्षा पास करने के बाद एमबीबीएस के लिए मौलाना मेडिकल कालेज में प्रवेश लिया है। उसकी माता जी श्रीमती शकुन्तला देवी का मंच पर सम्मान किया गया। केशव के शिक्षण शुल्क की राशि सेवा भारती के कार्यकर्ताओं ने दी। अंत में राम घर आयेंगे के गीत उपरांत कार्यक्रम का समापन किया गया। सभी को बूंदी, नमक पारे का प्रसाद वितरण किया गया। कार्यक्रम में मंच संचालन केन्द्र प्रमुख श्रीमती भारती सिंह ने किया। ❐

हंसराज जी ने सेवा कार्य के लिए दी राशि

गत 25 अक्टूबर 2024 को श्रीमान हंसराज जी धमीजा से 31000 रु का चेक सेवा भारती के नए प्रकल्प शुरू करने की इच्छा के साथ दिया। उन्होंने इच्छा वक्त की कि इन रुपए से सिलाई की और कंप्यूटर की नई क्लास कहीं शुरू हो सकती है तो अच्छा रहेगा। मैंने 10 मिनट की बातचीत में शाखा पर सेवा भारती के कई प्रकल्पों के बारे में बताया तो उन्होंने इच्छा जाहिर की कि मैं कुछ दान देना चाहता हूं और अपने घर ले जाकर 31000 का चेक दिया। मैं हंसराज जी धामेचा सूर्य निकेतन 69 वालों को बहुत धन्यवाद करता हूं। धन्यवाद शांतिलाल

गोपालधाम का वार्षिकोत्सव संपन्न

गत 6 अक्तूबर को केशवपुरम विभाग के गोपालधाम छात्रावास का प्रथम वार्षिकोत्सव मनाया गया। इसमें विशेष अतिथियों के रूप में पहदंजनतम हसवइंस बवउजतंकम बवउचंदल के निदेशक श्री नरेश मित्तल जी, श्री सुभाष अग्रवाल जी, प्रसिद्ध उद्यमी श्री रमेश पंवार जी, डै उमकपबंस बवउचंदल के निदेशक श्री संजय मनोचा जी पधारे। इसके साथ ही गोपालधाम के नियमित दानदाताओं में लायंस ब्लड बैंक शालीमार से बंधुओं का आना रहा। कार्यकर्ताओं में राष्ट्रीय सेवा भारती के मंत्री डॉ. राम कुमार, दिल्ली प्रांत सेवा भारती के उपाध्यक्ष श्री हेमंत जी, संगठन मंत्री श्री शुकदेव जी, सह संगठन मंत्री श्री सुनील जी, मंत्री श्री शैलेंदर जी, श्री इंद्रनील जी, श्री बिजेंद्र जी आदि रहे। जिलों के कार्यकारिणी सदस्य भी उपस्थित रहे। केशवपुरम विभाग के माननीय संघचालक जी, मोती नगर के माननीय संघचालक जी, विभाग के सह कार्यवाह जी का भी बच्चों को आशीर्वाद मिला। कार्यक्रम की शुरुआत हुई गणमान्य अतिथियों तथा प्रांत के कार्यकर्ताओं द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ। तत्पश्चात् छात्रावास के बच्चों द्वारा सरस्वती वंदना की सामूहिक प्रस्तुति दी गई। छात्रावास के बच्चों द्वारा रामायण पर अद्भुत प्रस्तुति दी गई। मंचासीन अतिथियों ने बच्चों को प्रोत्साहित करने से संबंधित आशीर्वचन दिए। इसके बाद कार्यक्रम में उपस्थित अन्य दानदाता बंधुओं का संक्षिप्त परिचय करवाकर कार्यक्रम को गति प्रदान की गई। बच्चों द्वारा 'बुजुर्गों की संभाल व सम्मान' से संबंधित मन को झकझोर देने वाली प्रस्तुति दी गई। तत्पश्चात् कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री शुकदेव द्वारा सेवा भारती के सेवा कार्यों तथा गोपालधाम छात्रावास को लेकर प्रेरक प्रसंगों के साथ उद्बोधन दिया गया। कार्यक्रम के अंत में बच्चों की सामूहिक 'आशाएं' गीत पर प्रस्तुति रही तथा अंत में कल्याण मंत्र कर कार्यक्रम को पूर्ण अर्थात् समाप्त कर प्रसाद का वितरण किया गया। – मनोज शर्मा (सह विभाग मंत्री) ❐

बच्चों का तीर्थाटन और ज्ञानार्जन

गोपालधाम छात्रावास के सभी बच्चों को 23 अक्तूबर को नेशनल साइंस सेंटर भ्रमण हेतु ले जाया गया। उसके बाद इंडियन काफी हाउस में लंच किया गया और प्राचीन हनुमान मंदिर में दर्शन के लिए गए। सभी बच्चों ने बहुत आनंद लिया। बच्चों के साथ केशव पुरम विभाग से श्री मनोज शर्मा और श्री धीरेन्द्र गुप्ता, वार्डन पंकज जी और शिक्षिका श्रीमति रेखा सिंह भी थीं।

गोपालधाम में पौधारोपण

गत 18 अक्तूबर को 'एक पेड़ माँ के नाम' कार्यक्रम के अंतर्गत गोपालधाम छात्रावास के बच्चों द्वारा छात्रावास परिसर में पौधे लगाए गए। इन पौधों की संभाल बच्चे स्वयं करेंगे। गमले एवं पौधों का प्रबंध एक दानदाता के सहयोग से किया गया।

सिलाई मशीनों का सहयोग

गत 22 अक्टूबर को सेवा भारती जिला गांधीनगर विभाग में रामकरण जी के प्रयास से अखिल भारतीय तरुण मित्र परिषद ने 10 सिलाई मशीनों का सहयोग गांधीनगर जिले को दिया। तरुण मित्र परिषद अध्यक्ष मनोज जी का कार्यकारिणी के साथ हेडगेवार केंद्र पर प्रवास रहा, उन्होंने केंद्र दर्शन किया। प्रांत विद्यार्थी प्रमुख सतीश शर्मा जी, प्रांत पर्यावरण टोली से महेंद्र अग्रवाल जी, जिला बौद्धिक प्रमुख जतिन जी और विभाग से रामकरण जी, सहमंत्री पवन जी, रुचि जी, जिले से मंत्री पंकज जी, सह मन्त्री विनीत जी, कोषाध्यक्ष परमेश्वर जी, बहन समिति मंत्री की निर्मल बहन जी अध्यक्ष सविता जी, तपस्या जी शिक्षिका निरीक्षिका आदि उपस्थित रहे।

शिक्षिकाओं का सम्मान

दीपोत्सव के पावन पर्व पर सेवा भारती कमला नगर जिला ने गत 26 अक्टूबर को शिक्षिका सम्मान कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ दीपप्रज्ज्वलन से हुआ। सेवाव्रत गीत एवं गायत्री मंत्र गाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डा एच सी गुप्ता एवं उनकी पत्नी थीं। इनके अतिरिक्त डॉण्वन्दना, समाज सेविका हेमलता जी, अनीता जी एवं विभाग से अनीता गुलवानी एवं जितेन्द्र जी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ने हमारी शिक्षिकाओं निरीक्षिकाओं एवं भजन मंडली की बहनों को दीपावली की शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम में डॉण्वन्दना जी ने बहनों को जीण्बीण्रोड़ पर चलने वाले उत्कर्ष प्रोजेक्ट के बारे में जानकारी दी। इसी के साथ दीपावली के पावन पर्व पर कमला नगर जिले की सभी शिक्षिकाओं को भेंट स्वरूप प्रेशर कुकर एवं कुछ राशि सहित मिठाई दी गई।भजन मंडली की बहनों को मिठाई कलेन्डर एवं मोमबत्ती भेंट में दी गई। कार्यकारिणी के सभी सदस्यों ने अपनी शिक्षिकाओं, निरीक्षिकाओं एवं भजन मंडली की बहनों एवं अन्य गणमान्य अतिथियों को दीपावली की शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम में सेवित जन की संख्या लगभग 50 से 55 की रही। कार्यक्रम के समापन पर जलपान की व्यवस्था रही।

पूर्वी विभाग के कार्यक्रम

मंदिर दर्शन

पूर्वी विभाग के सभी जिलों से कार्यकर्ता (बन्धु एवं बहनें), शिक्षिका व निरीक्षिका बहनें, भजन मण्डली की बहनों को माता झण्डेवाली के दर्शन हेतु बसों द्वारा ले जाया गया। इसमें सभी ने एक-दूसरे का सहयोग किया। मन्दिर दर्शन के पश्चात् मन्दिर की ओर से प्रसाद की व्यवस्था रही।

वाल्मीकि जयंती

पूर्वी विभाग में सभी जिलों में 17 अक्तूबर को सभी केन्द्रों पर वाल्मीकि जयंती मनाई गई। कैलाश नगर पर लवकुश की झांकी बनाई गई। जाकिर हुसैन कॉलेज के छात्रों द्वारा भगवान वाल्मीकि के जीवन के बार में सेवितजनों को अवगत करया गया। श्री राम केन्द्र महाराणा प्रताप एवं अन्य सभी केन्द्रों द्वारा बड़ी ही धूमधाम से चित्रण किया गया।

भजन-कीर्तन

नवरात्र के पावन अवसर पर सभी बस्ती में एवं सभी जिलों में केन्द्र पर भजन-कीर्तन का आयोजन किया गया। महिलाओं ने भक्तिभाव से माता के भजनों द्वारा समां बांध दिया। अन्त में प्रसाद वितरण गया गया। अत्यंत भक्तिभाव से कन्यापूजन किया गया। साथ ही यह भी सन्देश दिया कि बेटियां परिवार और समाज का महत्वपूर्ण तथा सम्मानित अंग हैं। इन्हें हर क्षेत्र में आगे बढ़ने देने में सहयोग करें। गांधी नगर जिले में घुमंतू समाज के बीच संचालित केन्द्र पर भी विधिवत पूजन किया गया।

किशोरी विकास

जिला इन्द्रप्रस्थ में प्रीत विहार नगर सी ब्लॉक में किशोरी विकास की कक्षा शुरू हो गई है। सभी बच्चों के नाम लिखे गए एवं जानकारी साझा किया गया।

सेवितजनों के मध्य मना जन्मदिवस

गत 7 अक्तूबर को चित्रा विहार केन्द्र और एसडीएम केन्द्र पर दानदाता श्री राजकुमार तायल जी ने सपरिवार सेवितजनों के मध्य अपना जन्मदिन मनाया। सेवितजनों में स्कूल बैग, खिलौने रिफ्रेशमेंट आदि का वितरण किया गया। राजकुमार जी से समय समय पर जिले को सहयोग मिलता रहता है। आशा है आगे भी उनका सहयोग बना रहेगा। जिले से जिला अध्यक्ष विजय जी, मंत्री पंकज जी, सहमंत्री हरेंद्र जी, बहन समिति अध्यक्ष सविता जी, निरीक्षिका सीमा जी और शिक्षिका पूनम और मनीषा भी उपस्थित रहे।

नए केंद्र का उद्घाटन

गत 9 अक्तूबर को घुमंतू समाज खुरेजी में एक नए केन्द्र, जिसका नाम 'महाराणा प्रताप केन्द्र' रखा गया है, का उद्घाटन हुआ। इसमें सिलाई प्रकल्प और बालवाड़ी कक्षा रहेगी। कार्यक्रम में विभाग से सह मंत्री रुचि जी, स्वावलंबन प्रमुख पवन जी, जिला अध्यक्ष विजय जी, मंत्री पंकज जी, सहमंत्री हरेंद्र जी, बहन समिति अध्यक्ष सविता जी, मंत्री निर्मल जैन जी, सहमंत्री तपस्या जी, निरक्षिका सीमा जी, मयूरी जी के साथ बस्ती से सेवितजन भी रहे। आज जिला अध्यक्ष विजय जी के पोते का जन्मदिन था। इस अवसर पर विजय जी ने सेवितजनों को उपहार दिया।

करवा चौथ पर मेहंदी मेला

18 और 19 अक्तूबर को करवाचौथ के शुभ अवसर पर दो जगह मेहंदी मेला रहा। इनमें विश्व जैन महिला संगठन, महावीर बिहर्ष संगठन जैन मंच, महिला प्रकोष्ठ वर्धमान जैन महिला संगठन और जियो महिला ग्रुप सहयोगी संस्थाओं का सहयोग रहा। 126 महिलाओं को मेहंदी लगाई गई। अर्जित राशि सेवितजन बेटियों को ही दी गई।

शाहदरा जिले में जिला अध्यक्ष शांतिलाल जी की अध्यक्षता में करवा चौथ के उपलक्ष्य में 18व 19 अक्टूबर को मेहंदी के 6 कैंप लगाए गए। ये हैं- जागृति मंदिर, सूर्य निकेतन मंदिर, विज्ञान विहार मंदिर, योजना विहार मंदिर, एजीसीआर मंदिर, और आनंद विहार मंदिर। प्रत्येक मंदिर में दो से तीन कार्यकर्ता साथ रहे। मेहंदी की शिक्षिकाओं के माध्यम से कार्यकर्ताओं के परिश्रम से शाहदरा जिले का यह कार्यक्रम बहुत सफल रहा!

सेवा भारती के कार्यकर्ता सम्मानित

नवरात्र के पावन अवसर पर उत्तरी विभाग रोहिणी में 'रोहिणी रामलीला कमेटी (रजि.)' द्वारा सेवा भारती के कार्यकर्ताओं, शिक्षिका एवं निरीक्षिकाओं को आमंत्रण कर विधिवत स्वागत किया गया।

BANSAL WIRE INDUSTRIES LTD.

BANSAL

Stainless Steel Wires - High/Medium Carbon Steel Wires
(Black and Galvonised)

Mfrs. : Low Carbon Steel Wires, Profile/Shaped Wires
(Black and Galvonised)

H.B. HHB & G.I. WIRES

Bansal Wire Industries Ltd.
F-3, Shastri Nagar, Delhi-110052 (India)
Tel. : +91-11-23648401, 23651890-91-92-93
Email : info@bansalwire.com, www.bansalwire.com

विज्ञापन के लिए आग्रह

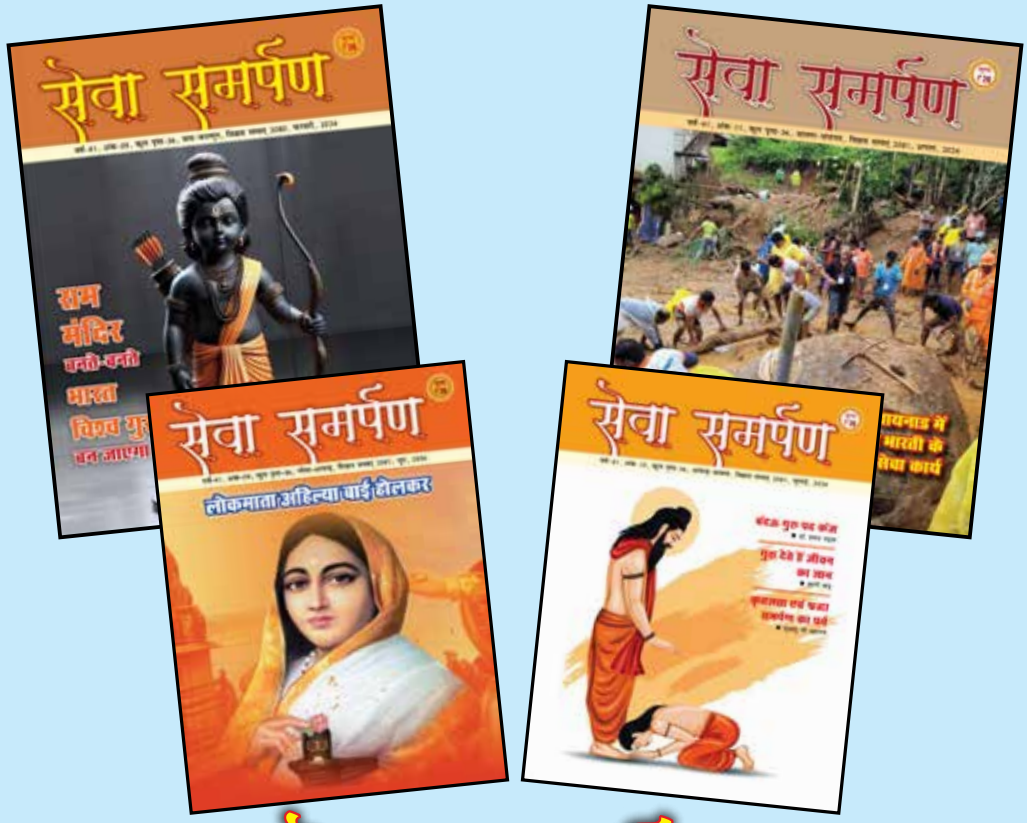

सेवा समर्पण

'सेवा समर्पण' पत्रिका समाज एवं संस्कृति के प्रति समर्पित, प्रतिष्ठित वर्ग, कार्यकर्ता एवं युवा वर्ग के बीच पिछले 41 वर्ष से 'नर सेवा-नारायण सेवा' के मूल मंत्र को लोकप्रिय बना रही है। इस पत्रिका द्वारा परिवार प्रबोधन, भारतीय जीवन शैली और संस्कारों से युक्त समसामयिक विषयों के साथ-साथ बच्चों, युवा वर्ग एवं महिलाओं संबंधी विषय सामग्री के द्वारा स्वावलम्बन, शिक्षा और संस्कारों को जन-जन तक पहुंचाने का विशेष कार्य हो रहा है। समय- समय पर किसी एक बिन्दु को केन्द्रित कर विशेषांक निकालने की योजना रहती है। आपसे प्रार्थना है कि अपने प्रतिष्ठान का विज्ञापन प्रकाशित कराएं और 50, 000 पाठकों तक अपनी पहुंच बनाएं। यह पत्रिका सरकारी कार्यालयों, मंत्रालयों, पुस्तकालय, व्यापारी वर्ग, कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र, अन्य गैर-सरकारी संगठनों, अस्पताल इत्यादि स्थानों पर जाती है।

संपर्क करें-

सेवा भारती, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001

फोन - 011-23345014-15

रजिस्टर्ड क्रमांक 40605/1983
तिथि 6-7 नवम्बर, 2024, प्रकाशन तिथि-5 नवम्बर, 2024
Posted at - LPC, DELHI RMS, DELHI-110006

डाक रजिस्टर्ड नं. U(C)-166/2022-24
DL(ND)-11/6188/2022-23-24
अग्रिम शुल्क के बिना प्रेषण

"AGARWAL PACKERS AND MOVERS LTD."

(नर सेवा - राष्ट्र सेवा)

APML

Nindra Daan Kendra for Truck Chaalak

(A Unique Concept to reduce Accidents on Roads by Trucks)

(ट्रक ड्राईवर देश का आंतरिक सिपाही है)

- 4,12,432 accidents happened yearly in India.
- Out of these accidents 1,53,972 lost their lives.
- Our Kendra saving 21 lives monthly on road to avoid sleep deprivation and stress.
- Empowering Drivers with respectful environment to provide them sound sleep with safe and secure parking space along with free barber, washroom facilities and all are free.

Pran Vayu Vahan

(कोविड के समय चल चिकित्सा)

- Modified trucks into "Oxygen Providers Van" during highest peak of COVID -II.
- Container converted into clinic within 24hrs.
- It is equipped with all facilities i.e. Oxygen cylinder, Beds, Oxygen Concentrator etc.
- Saved 543 Lives to provide Oxygen to highly vulnerable patients in association with Sewa Bharti.

Community Empowerment

(सामाजिक समरसता और अंत्योदय का जीवंत उदाहरण)

- Reducing inequalities to provide access to socially backward people to build temple of Sant Shiromani Kabir Ji Maharaj in Nalwa (Hisar) for their Spiritual well beings.
- Providing livelihood and skills to differently abled and financially backwards.
- Girl empowerment.
- Education to highly vulnerable children from villages and tribes.
- Adopted approach to reduce Carbon Emission to conserve environment.

09 300 300 300 www.agarwalpackers.com

मुद्रक/संपादक/प्रकाशक: डॉ.. शिवाली अग्रवाल द्वारा सेवा प्रकाशन न्यास के लिए 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित तथा शक्ति प्रिन्टर्स 1/3001, गली न.-16, रामनगर, मंडोली रोड, शाहदरा, दिल्ली-32, से मुद्रित।